सिध्द शंकर तन्त्र

॥ श्रीः ॥

सिद्धशंकरतन्त्रम् ।

मुरादाबादस्थ-श्यामसुन्दरलाल-त्रिपाठीकृत-

भाषाटीकोपेतम् ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : दिसंबर २०१५, सवंत् २०७२

मूल्य : ३० रुपये मात्र

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक :
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004, at their Shri Venkateshwar Press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune -411 013.

प्रस्तावना ।

इस तन्त्रमें पहले सनत्कुमार मुनिके मतसे निर्दिष्ट विधानसे श्रीदेवाधिदेव शंकरकी आत्मारूपमें भावना कर वामदेवादि शंकरके प्रसिद्ध नामोंसे स्थण्डिल अथवा लिंगमें पूजन किया जाता है । भक्त जिस जिस कामनासे जिस विधानके अनुसार पूजन करता है उसकी उस उस इष्टकी सिद्धि प्राप्त होती है । यह प्रसिद्ध है कि भोलानाथ शंकर विना मन्त्र तन्त्रके भी केवल भक्तिभावसे कामना पूर्ण करते हैं यदि विधिसहित अनुष्ठान किया जावे तो तो असाध्य प्रयोग भी सुसाध्य होजाते हैं. इस ग्रन्थके पटलोंमें क्रमसे पञ्च ब्रह्माख्यान, पञ्च ब्रह्मविधान, तत्पुरुषविधान, सद्योजातविधान आदिसे ग्रन्थ पूर्ण हुआ है । आशा है कि, तंत्रप्रेमी लोग इससे लाभ उठावेंगे ।

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण.

संस्करण : दिसंबर २०१५, सवंत् २०७२

मूल्य : ३० रुपये मात्र

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक :

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४.

Printers & Publishers :

Khemraj Shrikrishnadass

Prop: Shri Venkateshwar Press

Khemraj Shrikrishnadass Marg,

7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com

E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004, at their Shri Venkateshwar Press, 66, Hadapsar Industrial Estate, Pune -411 013.

प्रस्तावना ।

इस तन्त्रमें पहले सनत्कुमार मुनिके मतसे निर्दिष्ट विधानसे श्रीदेवाधिदेव शंकरकी आत्मारूपमें भावना कर वामदेवादि शंकरके प्रसिद्ध नामोंसे स्थण्डिल अथवा लिंगमें पूजन किया जाता है । भक्त जिस जिस कामनासे जिस विधानके अनुसार पूजन करता है उसकी उस उस इष्टकी सिद्धि प्राप्त होती है । यह प्रसिद्ध है कि भोलानाथ शंकर विना मन्त्र तन्त्रके भी केवल भक्तिभावसे कामना पूर्ण करते हैं यदि विधिसहित अनुष्ठान किया जावे तो तो असाध्य प्रयोग भी सुसाध्य होजाते हैं. इस ग्रन्थके पटलोंमें क्रमसे पञ्च ब्रह्माख्यान, पञ्च ब्रह्मविधान, तत्पुरुषविधान, सद्योजातविधान आदिसे ग्रन्थ पूर्ण हुआ है। आशा है कि, तंत्रप्रेमी लोग इससे लाभ उठावेंगे ।

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " स्टीम् प्रेस,
कल्याण.

श्रीः ।

अथ सिद्धशंकरतन्त्रम् ।

भाषाटीकोपेतम् ।

प्रथमः पटलः ।

व्यास उवाच ।

शृणुध्वमेतन्मुनयः समेताः सनत्कुमारेण विधानमुक्तम् । समासतो देवमतो विधानं सुमंत्रराजस्य हि साधनाय ॥ १ ॥

व्यासजी बोले—हे मुनियो ! मैं तुमसे सनत्कुमार-जीका कहा हुआ मंत्रराजके साधनका विधान संक्षेपसे कहता हूँ, उसको सुनो ॥ १ ॥

देशे सुगुप्ते सुमनोरमे तु स्नात्वा शुचिश्चैक-मनाश्च भूत्वा । संस्मृत्य मंत्रं मनसा तदंगै-र्न्यासं कराभ्यां करयोश्च कुर्यात् ॥ २ ॥

अच्छे मनोरम और शुभ स्थानमें स्नानकर पवित्र हो एकाग्र मनसे मन्त्रका स्मरणकर अंगन्यास और करन्यास करै ॥ २ ॥

हकारयुक्तेन तु वह्निनाऽथ
पश्चात् षडङ्गं गुरुणा स्वरेण ॥ ३ ॥

हकार और पीछे गुरु स्वरसे सहित रेफ "ह्रां" इस वीजसे षडंगन्यास करै ॥ ३ ॥

चतुर्भिर्हृदयं प्रोक्तं चतुर्भिश्च शिरो भवेत् ।
अष्टभिस्तु शिखा ज्ञेया अष्टभिः कवचं न्यसेत्४

चार हकार रेफाकार अनुस्वारसे हृदय कहा है और वक्ष्यमाण चार अक्षरोंसे शिर एवं "ह्रू घोर घोरतरेभ्यः" इनसे शिखा 'ओं ह्रैं सर्वतः सर्वेभ्यः' इन आठ अक्षरोंसे कवच न्यास करै ॥ ४ ॥

अष्टभिर्नेत्रमुद्दिष्टं फट् हस्ते संनियोजयेत् ।
एवं विन्यस्य देहे तु मंत्ररूपमनुस्मरेत् ॥५ ॥

'नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः' इन आठ अक्षरोंसे 'नेत्रत्रयाय वौषट्' करन्यास करै और फट् नियुक्त करै, इस भाँति अंगन्यास कर मंत्ररूपका न्यास करे ॥ ५ ॥

माहेश्वरं वपुः कृत्वा जटामुकुटभूषणम्।
वामदेवाय ज्येष्ठाय नमो रुद्राय च नमः ॥ ६ ॥

शिवस्वरूप बनाकर जटा और मुकुटको धारण करै, वामदेव ज्येष्ठ और रुद्ररूपके निमित्त नमस्कार है ॥ ६ ॥

कलविकरणाय नमो बलप्रमथनाय नमः।
सर्वभूतदमनाय श्रीमनोन्मनाय नमः ॥ ७ ॥

कलविकरण रूपके निमित्त नमस्कार है, बलप्रमथन रूपके अर्थ नमस्कार है और सब भूतोंको दमन करनेवाले मनोन्मन रूपके लिये नमस्कार है ॥ ७ ॥

सर्वाभरणपूर्णाङ्गं चन्द्रार्द्धकृतशेखरम्।
स्वशरीरं ततः पूज्य पुष्पधूपविलेपनैः ॥ ८ ॥
स्थण्डिले वापि लिंगे वा पश्चाद्यजनमारभेत् ॥ ९ ॥

समस्त अलंकारोंको सर्वांगमें धारणकर अर्द्ध-

चन्द्रको मस्तकपर स्थित करै फिर पुष्प धूप और चंद-नसे अपने शरीरको लिप्तकर स्थंडिल वा लिंगमें पूजन करै ॥ ८ ॥ ९ ॥

ॐ हां हृदयाय नमः हृदयमाग्नेय्यां न्यसेत् । ॐ हीं अघोरेभ्यः शिरसे स्वाहा शिर ईशान्यां न्यसेत् । ॐ हूं घोरतरेभ्यः शिखायै वषट् शिखां नैर्ऋत्ये विन्यसेत् ॥ १० ॥

'ॐ हां हृदयाय नमः' इस मंत्रसे हृदयको आग्नेय दिशामें न्यास करे,'ॐ हीं अघोरेभ्यः शिरसे स्वाहा' इस मन्त्रसे शिरको ईशान दिशामें न्यास करै 'ॐ हूं घोर घोरतरेभ्यः शिखायै वषट्' इस मन्त्रसे शिखाको नैर्ऋत्य दिशामें न्यास करै ॥ १० ॥

ॐ हैं सर्वतः सर्वेभ्यः कवचाय नमः कवचं वायव्ये विन्यसेत् । ॐ हौं नमस्ते रुद्ररूपेभ्यो नेत्राभ्यां वषट् नेत्रमुपरि विन्यसेत् ॥ ११ ॥
ॐ हः अस्त्राय फट् अस्त्रं चतुर्दिक्षु विन्यसेत् १२

'ॐ हैं सर्वतः सर्वेभ्यः कवचाय नमः' इस मंत्रसे कवचको वायव्य दिशामें न्यास करै, 'ॐ हौं नमस्ते रुद्ररूपेभ्यो नेत्राभ्यां वषट्' इस मंत्रसे नेत्रके ऊपर भागमें न्यास करै । 'ॐ हः अस्त्राय फट्' इस मन्त्रसे अस्त्रका चारों दिशाओंमें न्यास करै ॥ ११ ॥ १२ ॥

एवं न्यस्य विधानेन हकारं वह्निसंयुतम् ।
नादबिन्दुकलाक्रान्तमघोरं हृदये यजेत् ॥
मध्ये घोरेश्वरीं देवीं तस्योत्संगे तु पूजयेत् १३॥

इसप्रकार विधानसे न्यासकर वह्नि रेफ संयुत हकारको नादबिंदुकी कलासे युक्त अघोरको हृदयमें पूजन करै, उसके मध्यमें घोरेश्वरी देवीकी पूजा करै ॥ १३॥

दंडं शशिकरं चैव अंकुशं कर्त्तरीध्वजौ ।
सविसर्गा परा देवी अघोरा परिकीर्त्तिता ॥१४॥

दंड, चन्द्रकिरण, अंकुश, कर्त्तरी, ध्वज, विसर्ग सहित परादेवी हीं अघोर नामसे विख्यात है ॥ १४॥

आदिबीजं समुद्दिश्य द्वितीयस्य चतुर्थकम् ।
त्रयोदशेन चाक्रान्तं वह्निमेकादशान्वितम् ॥१५॥

आदि (अकार) बीजका उद्देश्य करके और दूसरे कवर्गके चौथे (घ) त्रयोदश (ओ) और वह्नि (रेफ) तथा ग्यारहवें एकारसे युक्त ॥ १५ ॥

अष्टमस्यादिमं रूपं समस्तस्य चतुर्थकम् ।
हकारं त्रिस्वराक्रान्तं हुं फट्कारेण संयुतम्॥१६

आठवें शवर्गके आदिका रूप शकार संधियोग संपूर्ण समुदायका चौथा अक्षर ईकार हकार तीसरे स्वरसे युक्त ईकारसे संयुक्त तथा हुं फट्कारसे युक्त (अघोरेशी ह्रीं हुँ फट्) यह मंत्र हुआ ॥ १६ ॥

एषा विद्या महाविद्या नाम्ना घोरेश्वरीति च ।
सकारे पूजिता देवी सद्यः प्रत्ययकारिका ॥१७॥

यह विद्या महाविद्याके नामसे विख्यात है, इसे घोरेश्वरी कहते हैं, सकारमें देवी पूजित होनेसे शीघ्र फल देती है ॥ १७ ॥

एवं संपूजयेद्देवमघोरं घोरनाशनम् ।
मनसा पूजयेद्यस्तु एकचित्तः समाहितः ॥१८॥
सर्वान्कामानवाप्नोति इह लोके परत्र च ॥१९॥

जो इसप्रकार अघोर घोरनाशन देवका एकचित्त हो सावधानसे पूजन करता है उसकी इसलोकमें और परलोकमें समस्त कामनायें पूर्ण होती हैं ॥ १८ ॥ १९ ॥

कपालमालाभरणं चतुर्भुजं
वक्रेक्षणं शूलधराभयप्रदम् ।
त्रिलोचनं खंडशशाङ्कधारिणं
ध्यायेद्धरं यः स लभेत ईप्सितम् ॥ २० ॥

खोपडियोंकी माला पहने, चार भुजावाले, भाल-दृष्टि, शूलधारी, अभय देनेवाले, त्रिलोचन, अर्द्धचन्द्र-धारी हरका जो ध्यान करता है उसके सब मनोरथ सिद्ध होजाते हैं ॥ २० ॥

सर्वावस्थागतो नित्यं यः पूजयति शङ्करम् ।
अपवित्रः पवित्रो वा स्वच्छन्दस्तेन कीर्तितः ॥२१॥

अपवित्र वा पवित्र स्वच्छंदतासे जो सब अवस्थावोंमें प्राप्त होकर नित्य शंकर देवका पूजन करताहै ॥ २१ ॥

बिल्वपत्रैस्तु यो लक्षं जप्त्वा होमं तु कारयेत् ।
एकलिंगे शुचौ देशे तस्य प्रत्यक्षतामियात् ॥२२॥

और शिवमंत्रका जपकर जो एक लाख बेलपत्रसे हवन करताहै वह एक लिंगके पवित्र देशमें पूजनेसे शिवकी प्रत्यक्षताको प्राप्त होताहै ॥ २२ ॥

कमलैर्यो यजेल्लक्षं पश्चाद्धोमं समारभेत् ।
ददात्यभिमतां सिद्धिमणिमादिगुणात्मिकाम् २३

जो एकलाख कमलोंसे पूजन कर हवन करताहै, शिवजीसे उसको अणिमादिक गुणोंकी प्राप्ति होतीहै २३

ततः प्रसन्नतां गत्वा देहेनान्येन शङ्करः ।
नयत्यभीप्सितॉंल्लोकाञ्जरामृत्युविवर्जितान् ॥२४॥

अनन्तर शिवजी उसपर प्रसन्न होकर अन्य देहसे उसे जरा मृत्युसे रहित अभीष्ट लोकोंमें लेजाते हैं ॥ २४ ॥

श्रीपत्रगुग्गुलस्यापि गुटिकाभिः समाचरेत् ।
जपं होमं विधानेन पाताले सिद्धिमाप्नुयात् २५

श्रीपत्र और गूगलकी गुटिका बनावे पीछे विधिपूर्वक जप और होम करनेसे पाताल (तक) में सिद्धि प्राप्त होतीहै ॥ २५ ॥

सततं यो जपेन्मंत्रमघोरं क्लेशनाशनम् ।
तस्य सर्वाः प्रसिध्यन्ति सिद्धयो मनसेप्सिताः ॥ २६ ॥

जो अघोर क्लेशनाशन मन्त्रका निरंतर जप करताहै उसके सब मनोरथ सिद्ध होते हैं ॥ २६ ॥

तिलहोमेन नश्यन्ति ग्रहपीडाद्युपद्रवाः ।
सघृतशर्करया च आयुर्वृद्धिर्भवेदिह ॥ २७ ॥

तिलके होमसे ग्रहपीडादि सब उपद्रव नष्ट हो जाते हैं, घृत और शर्कराके होम करनेसे आयुकी वृद्धि होती है ॥ २७ ॥

क्षीरवृक्षसमिद्भिस्तु समृद्धिरुपगच्छति ॥ २८ ॥

बड आदि क्षीर वाले वृक्षोंकी समिधा द्वारा हवन करनेसे समृद्धि प्राप्त होती है ॥ २८ ॥

सदा घोरेश्वरीं देवीं यो जपेदर्चयेन्नरः ।
अघोरं हि यथा देवं द्विगुणं तस्य तत्फलम् ॥२९॥

सदा घोरेश्वरी देवीका जो जप और पूजन करताहै, अघोर देवकी समान पूजन करनेसे उसको दूना फल प्राप्त होता है ॥ २९ ॥

यं यं काममभिध्यायंस्त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
तं तं प्राप्नोत्यसंदिग्धं देव्याश्चैव प्रभावतः ॥
जपहोमार्चनेनैव देव्याः कर्मणि साधने ॥ ३०॥

तीनों लोकोंमें दुर्लभ जिस २ कामनासे साधक ध्यान करता है वह समस्त कामनायें देवीके प्रसादसे पूर्ण हो जाती हैं केवल जप होमार्चनसेही देवीके अनुष्ठानमें सिद्धि प्राप्त होती है ॥ ३० ॥

बद्ध्वा घोरेश्वरीं मुद्रां दर्शयेद्देवितुष्टये ।
तां प्रवक्ष्यामि वः सम्यक् सर्वसिद्धिकरां शुभाम् ॥ ३१ ॥

घोरेश्वरी मुद्रा बाँधकर देवीके सन्तोष करनेको दिखावे, उस सर्वसिद्धि देनेवाली मुद्राको मैं तुमसे कहता हूं ॥ ३१ ॥

संमुखौ तु करौ कृत्वा स्वान्योन्यं ग्रंथयो-
ऽङ्गुलीः । उभयोस्तर्जनीभ्यां तु संगृह्णीया-
दनामिके ॥ ३२ ॥

सन्मुख हाथ कर अपनी उंगलीको ग्रंथित करै दोनों तर्जनियोंको अनामिकासे ग्रहण करै ॥ ३२ ॥

संमृश्य मध्यमे चोर्ध्वमंगुष्ठौ श्लेषयेत्तयोः ।
कृत्वा ह्यधोमुखीं मुद्रां ललाटे सन्निवेशयेत्॥३३॥

मध्यमाको ऊर्ध्वमें कर उसमें अंगूठे मिलाय अधोमुखी मुद्राको कर ललाटमें संनिवेशित करै ॥ ३३ ॥

बंधौ कृत्वा ततो नेत्रे जिह्वां चैव हि चालयेत् ।
संस्मरेत्परमं मंत्रं सर्वसिद्धिप्रवर्त्तकम् ।
ततः सिध्यंति भूतानि सदेवासुरमानुषाः ॥३४॥

नेत्रोंको बंदकर जिह्वाको चलावै और परम सिद्धिके

देनेवाले परम मन्त्रको स्मरण करै तब देवता, असुर और मनुष्य सब सिद्ध हो जाते हैं ॥ ३४ ॥

ग्रहवेतालडाकिन्यो दुष्टाश्चान्ये सहस्रशः ।
प्रलयं यांति ते सर्वे मैत्रीमायांति मानवाः ॥३५॥

ग्रह, वेताल, डाकिनी और अनेक दुष्ट नष्ट हो जाते हैं, एवं मनुष्योंसे मित्रता हो जाती है ॥ ३५ ॥

स्वच्छन्दस्य समाख्यातं पूजनं दिशि
संस्थितम् ॥ ३६ ॥

यह मैंने स्वच्छंद पूजन वर्णन किया है जो दिशाओंमें स्थित है ॥ ३६ ॥

लिंगे वा स्थण्डिले वापि सर्वकामफलप्रदम् ।
इहलोके परे स्वर्गं राज्यं चैव लभेन्नरः ॥ ३७ ॥

लिङ्ग वा स्थंडिलमें पूजा करनेसे सब अभिलाषायें पूर्ण होती हैं और इस लोकमें राज्यकी तथा मरनेके पीछे स्वर्गकी प्राप्ति होती है ॥ ३७ ॥

यथैव पूज्यते शंभुं मंत्रैः पञ्चभिरेव च ।
मुनयस्तत्प्रवक्ष्यामि स्वर्गमोक्षकरं परम् ॥ ३८ ॥

जिस प्रकार पाँच मन्त्रोंसे शिवका पूजन होता है, हे मुनियो ! वह स्वर्ग और मोक्ष देनेवाला विधान तुमसे कहता हूं ॥ ३८ ॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ३९ ॥

सब सृष्टिके कारण-तत्पुरुष महादेवका हम ध्यान करते हैं, वह हमारी बुद्धियोंको अच्छे कार्योंमें प्रेरण करैं ॥ ३९ ॥

चतुर्थस्तु महावक्त्रं गायत्र्यै तन्निगद्यते ।
पञ्चमं तु तथा वक्त्रं शृणुध्वमेकचित्तया ॥४०॥

चौथे महावक्त्ररूपको गायत्री कहाहै और पंचम मुखको सावधान होकर एक चित्तसे सुनो ॥ ४० ॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ।
[illegible]निर्ब्रह्मा स्वयंभुवे ब्रह्मणो नमः ॥ ४१ ॥

सब विद्याओंके ईशान, सब भूतोंके ईश्वर, प्रजापति ब्राह्म, स्वयंभू ब्रह्माके निमित्त नमस्कार है ॥ ४१ ॥

सद्यादिभिर्यजन्तीह ये शिवं सर्वकारणम् ।
ते मोक्षमाप्नुवन्तीह मुनयो मोक्षकांक्षिणः ॥ ४२ ॥

जो सर्वकारण शिवको सद्यादि नामसे पूजन करते हैं, वे मोक्षकी इच्छा करनेवाले मुनि मोक्षको प्राप्त होते हैं ॥ ४२ ॥

ईशानादिक्रमेणैव ईशानमर्चयंति ये ।
ते स्वर्गस्य हि भोक्तारो मर्त्यलोकसुखस्य च ॥४३॥

ईशानादिके क्रमसे जो ईशानदेवका पूजन करते हैं, वे इसही लोकमें सुख और स्वर्गके सुख भोगते हैं ॥४३॥

पूर्ववक्त्रं मया ख्यातमूर्ध्ववक्त्रं हि तापसाः ।
तस्मात्संपूजयेन्नित्यमेकेनैव यतात्मवान् ॥ ४४ ॥

पूर्वमुख मैंने कहा, ऊर्ध्वमुखको तपस्वी पूजते हैं, इस कारण यत्नपूर्वक एकही देवका पूजन करना चाहिये ४४

लिङ्गे वा स्थण्डिले शंभुं सर्वकामफलाप्तये ॥ ४५ ॥

इति श्रीसिद्धशङ्करतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमे पञ्चब्रह्माख्याने प्रथमः पटलः समाप्तः ॥ १ ॥

लिंग वा स्थंडिलमें सम्पूर्ण मनोरथोंकी सिद्धिके लिये शंभु भगवान्का पूजन करै ॥ ४५ ॥

इति श्रीसिद्धशङ्करतन्त्रभाषाटीकायां प्रथमः पटलः समाप्तः ॥ १ ॥

द्वितीयः पटलः ।

व्यास उवाच ।

भुक्तिमुक्तिकरो देवः शंकरः परिकीर्तितः ।
विना मंत्रार्चितः शम्भुः किं पुनर्मंत्रसंयुतः ॥ १ ॥

व्यासजी बोले—भुक्ति और मुक्ति देनेवाले भगवान् शङ्कर विनाही मन्त्र और पूजनके शुभफल देते हैं फिर मन्त्रपूर्वक पूजन कियाजाय तो क्याही उत्तम बात हो॥ १

ज्ञातं मया मुनिश्रेष्ठ किमेतत्सकलं जगत् ।
ज्ञानवान्मोहितो देवान्मो हो मां समुपाश्रितः ॥२॥

हे मुनिश्रेष्ठ ! क्या यह ज्ञानस्वरूपसेप्राप्त किया है; ज्ञानवान् भी दैवसे मोहित हैं और मैं तो अज्ञानी हूं॥२॥

जानंतोऽपि न जानन्ति विष्णुमायाविमोहिताः ।
लोकः सुप्तो विबुद्धस्तु कथं निद्रामुपेयिवान् ॥३॥

विष्णुकी मायासे मोहित जानते हुएभी नहीं जानते हैं, यह लोक जब शयन कर गया था फिर जाग करके भी किसप्रकार निद्राको प्राप्त हुआ ॥ ३ ॥

आद्येन स्वस्य जानाति मृत्युसेना पतिष्यति ।
कस्मान्न पतते धर्म्मे मोक्षं प्रति महामुने ॥ ४ ॥

अपने पूर्व अनुभवसे जानते हैं कि, रोगादि होनेसे मृत्यु होतीहै, हे महामुने ! फिर यह लोक मोक्षके साधक कर्म्मको क्यों नहीं सेवन करते हैं ॥ ४ ॥

एतत्सर्वं समाख्याहि मानुषाणां हितार्थतः ॥
यह सब मनुष्योंके हितके लिये आप कहिये ॥५॥

सनत्कुमार उवाच ।

पञ्चभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
स्वकर्मवशगाः सर्वे प्राणिनः सम्भवन्त्यतः ॥६॥

सनत्कुमारजी बोले—यह स्थावर जङ्गमात्मक जगत् पंचभूतात्मक है, इसमें समस्त प्राणी अपने कर्मके वशी-भूत होकर जन्म लेते हैं ॥ ६ ॥

आहारनिद्राभयमैथुनञ्च सामान्यमेतत्पशुभि-र्नराणाम् । ज्ञानेन हीनाः पशुभिश्च तुल्याः स्वकर्मबद्धाः प्रभवन्ति नित्यम् ॥ ७ ॥

आहार, निद्रा, भय, मैथुन, यह मनुष्य और पशुमें समान, हैं, ज्ञानसे हीन प्राणी पशुके समान हैं और कर्मसे बंधे हुए फिरते हैं ॥ ७ ॥

न यत्कृते नापि यथा तथापि
भावस्तदाज्ञानवतां नराणाम् ।
प्रयांति सम्यग्विधिना स्वकर्म
चतुर्विधा भूतगणा नृलोके ॥ ८ ॥

जिसके निमित्त न होनेसे यथा तथा अज्ञानवाले मनुष्योंको वह भाव होता है, अपने कर्मसेही चार प्रकारके प्राणी संसारमें विचरते हैं ॥ ८ ॥

भवन्ति यांतीव पुनर्विनाशं
प्रबुद्ध्यमाना न हि चोद्विजन्ते ।
सुसंचरन्तो बहुदुःखखिन्नाः
कृत्वेह पापं निरये प्रयांति ॥ ९ ॥

उत्पन्न होते हैं फिर मरते हैं यह जानकर भी मनुष्य उद्वेजित नहीं होते हैं, अनेक दुःखसे खिन्न हुए पाप करनेके कारण नरकमें जाते हैं ॥ ९ ॥

ते स्थावरत्वं निरयावतीर्णाः
तिर्यक्त्वमिच्छन्ति पुनः समस्तम् ।
पश्चात्तथा मानुषतां कुयोनि
स्तत्रंन कुर्वति यदा स्वधर्म्मैः ॥ १० ॥

ये नरकमें पतित होकर स्थावरत्वकी इच्छा करते हैं, फिर तिर्यक् योनिकी इच्छा करते हैं और उस योनिमें कभी अपने धर्म्मके कारण मनुष्ययोनिकी लालसा करते हैं ॥ १० ॥

शिवे गुरौ वापि हि मुक्तिहेतोः
स्वकर्म्मबद्धस्तु भवेन्निमग्नः ।

निलीयते ब्रह्मणि तद्वयैक्याद्
यथा जले बुद्बुदवत् क्षपाद्धि ॥ ११ ॥

अपने कर्म्मवशसे संसारमें निमग्न हुए शिव और गुरुमें मुक्तिके निमित्त जो भक्ति करते हैं वे क्षण·मात्रमें तरजाते हैं, जैसे जलका बुद्बुद क्षणमें टूट जाता है ॥ ११ ॥

देव्युवाच ।

पंचब्रह्मविधानं तु मानुषाणां हितार्थतः ।
पुनः पृच्छामि देवेश कथयत्व प्रसादतः॥१२॥

देवीने कहा—मनुष्योंके हितके निमित्त फिरभी पंचब्रह्मका विधान कहिये, मैं आपकी प्रसन्नतासे फिर पूछती हूं ॥ १२ ॥

ईश्वर उवाच ।

कथयामि शृणुष्वेदं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
ईशानस्य सुभक्तानामिहामुत्र फलप्रदम् ॥ १३ ॥

शिवजी बोले—संपूर्ण सिद्धि देनेवाले विधानको

कहता हू सुनो, ईशानका माहात्म्य दोनों लोकोंमें अपने भक्तोंको फल देनेवाला है ॥ १३ ॥

कपिलापंचगव्येन स्नात्वा जप्त्वाऽष्टकं नरः ।
जुहुयादष्टसाहस्रं तिलैर्मुच्येत पातकैः ॥ १४ ॥

मनुष्य कपिला गौके पंचगव्यसे स्नानकर अष्टक जप कर आठ हजार तिलकी आहुति देनेसे सब पातकोंसे छूट जाताहै ॥ १४ ॥

तथोदकेन संपूर्य कुम्भं जप्त्वा शतं शतम् । दिने
दिने तु संस्नायात्स लक्ष्म्या पुत्रवान् भवेत् ॥ १५ ॥

इसी प्रकार घटको जलसे पूर्णकर सौवार मंत्रसे अभिमंत्रितकर प्रतिदिन स्नान करनेसे धनी और पुत्रवान् होताहै ॥ १५ ॥

देवस्य दक्षिणामूर्तेर्जपेदास्तमनादवेः ।
अष्टावेव सहस्रं तु हुत्वा सर्वोपपातकैः ॥ १६ ॥

दक्षिणामूर्तिदेवका सूर्यास्तपर्यन्त जप करता रहै फिर आठ हजार आहुति द्वारा हवन करनेसे सब उपपातकोंसे छूट जाताहै ॥ १६ ॥

गुग्गुलस्य गुटीः कृत्वा पंचामृतेन मिश्रिताः ।
हुत्वाऽग्नौ वश्यतां यान्ति यक्षराक्षसमानुषाः ॥
संग्रामे जयमाप्नोति न क्लेशैरभिभूयते ॥ १७ ॥

गुग्गुलकी गुटीकर पंचामृतमें मिलाय अग्निमें हवन करनेसे यक्ष राक्षस और मनुष्य वशीभूत हो जाते हैं, संग्राममें जय होती है और वह मनुष्य क्लेशोंसे तिरस्कार नहीं पाता है ॥ १७ ॥

उपसर्गे त्रिरात्रन्तु देवस्य दक्षिणे स्थितः ।
जप्त्वा चाष्टसहस्रं तु जुहुयात्समिधस्ततः ॥ १८ ॥
दधिमधुघृताक्तास्तु हुत्वा शान्तिर्भवेदिह ॥ १९ ॥

किसी प्रकारके विघ्न उपस्थित होनेपर तीन रात देवताकी दाहिनी ओर बैठकर आठ हजार जपकर आठ हजार दधि, मधु और घृतकी आहुति देनेसे शान्ति होती है ॥ १८ ॥ १९ ॥

कपिलायाः सवत्साया दध्याज्यमधुसंयुतम् ।
सहस्रमोदनं हुत्वा सुपुत्रानीप्सिताँल्लभेत् ॥ २० ॥

बछड़ेवाली कपिला गौका दही और घी मधुमें मिलाय आठ हजार आहुति देनेसे ईप्सित सुपुत्रोंकी प्राप्ति होती है ॥ २० ॥

गुग्गुलं घृतसंमिश्रं हुत्वा चाष्टसहस्रकम् ।
सर्वे वश्या भवन्तीह हुत्वा शतसहस्रकम्॥२१॥

घृत मिले गूगलकी आठ हजार आहुति देनेसे कल्याण होता है और एक लाख आहुति देनेसे समस्त प्राणी वशीभूत हो जाते हैं ॥ २१ ॥

पद्मादीनि निधानानि प्राप्नोति मुच्यते यथा ।
हत्यया ब्राह्मणस्येह शिवसायुज्यतामियात्॥२२॥

वह पद्मादि निधियोंको प्राप्त होकर मुक्त हो जाता है और ब्रह्महत्यासे छूटकर भी शिवसायुज्यको प्राप्त होता है ॥ २२ ॥

भिक्षाहारोऽभिमंत्र्यापो यः शिवाय प्रदापयेत् ।
बिल्वं वा बिल्वपत्रं वा सोऽश्वमेधफलं लभेत्॥२३॥

भिक्षाके आहारको करनेवाला पुरुष जलको अभि-मंत्रित कर शिवके निमित्त दान करनेसे बेल वा बेल पत्रके दान करनेसे अश्वमेधके फलको प्राप्त होता है ॥ २३ ॥

पंचगव्याग्निष्टोमस्य तीर्थाद्भिः सर्वजातिकम् ।
सकुशैः सर्वगंधैश्च सर्वाभयफलं लभेत् ॥ २४ ॥

पंचगव्यके दानसे अग्निष्टोमके, तीर्थोंके जलके दानसे समस्त फल कुशा और सर्व गंधके दानसे अभय फलको पाता है ॥ २४ ॥

सुघनी शतहोमेन सतिलेन घृतेन हि ।
व्रीहिभिस्तु कुले तस्य न दरिद्रोऽभिजायते २५

जो साधक तिल, घृत और साठीके चावलोंद्वारा सौवार हवन करता है तो उसके कुलमें कोई दरिद्री नहीं होता है ॥ २५ ॥

जप्त्वा चाष्टशतं विद्वान् व्रजेत्क्षेमी सदा पथि ।
दुर्गे भयाकुले नद्यां न भयं विद्यते क्वचित् ॥२६॥

आठ सौ मंत्रका जप करनेसे विद्वान् क्षेमको प्राप्त होता है और सदा मार्गमें विचरनेसे उसको दुर्गमें, भयके स्थानमे और नदी आदिकमें किसी प्रकारका भय नहीं होता है ॥ २६ ॥

आदित्याभिमुखो भूत्वा ऊर्ध्वबाहुः शिवार्चकः ।
ब्रह्महत्यादिपापा निनश्यन्त्येव न संशयः ॥२७॥

शिवका पूजन करनेवाला सूर्यके सन्मुख हो ऊपर-को भुजा उठाकर जप करै तो निःसन्देह उसके ब्रह्म-हत्यादिक पाप दूर हो जाता है ॥ २७ ॥

सुरापानाच्छकृन्मूत्रात्स्तेयात्स्वगुरुदारगात् ।
सलिलस्थः सप्तदिनान्यभक्षणाद्विशुद्धचति २८॥

सुरापान, विष्ठा, मूत्र पवित्र स्थानमें करना, चोरी और गुरुस्त्रीमें गमन करनेके पापसे जलमें स्थित हो सात दिन जल पान करनेसे शुद्ध होजाता है ॥ २८ ॥

राज्ञां प्रतिग्रहीता तु शूद्रान्नं बहुधा ह्यदन् ।
मुच्यते पातकात्सद्यो निराहारो जितेन्द्रियः॥२९॥
त्रिसंध्यं यो जपेन्नित्यं मासेनैकेन शुद्धचति॥३०॥

राजाका प्रतिग्रह लेनेसे एवं स्त्री और शूद्रके अन्न-को अधिक खानेसे जो पातक लगता है उस पातकसे निराहार और जितेन्द्रिय रहकर तीनों संध्याओमें एक मास जप करनेपर शीघ्र छूट जाता है ॥ २९-३० ॥

गजसिंहवराहेषु शत्रुराजकुलेषु वा ।
न भयं विद्यते तस्य मनसा यो जपेदथ ॥ ३१ ॥

जो मनसे शिवको जपता है, वह गज सिंह वराह शत्रु और राजकुलमें निर्भय रहता है ॥ ३१ ॥

मनसा यो जपेन्मंत्रमीशानध्यानमास्थितः ।
देहेनानेन संसिद्धः प्रयाति परमं पदम् ॥ ३२ ॥

जो मनसे ईशानके ध्यानमें स्थित हो जप करता है वह इसी देहसे सिद्ध हो परम पदको प्राप्त होताहै ॥ ३२॥

कृत्वा सुदुष्कृतं देवि मन्त्रेणानेन मां स्मरेत् ।
विमुक्तः पातकैः सर्वैर्मम लोके महीयते ॥ ३३ ॥

इति श्रीसिद्धशंकरतंत्रे सर्वतंत्रोत्तमे पञ्चब्रह्मविधाने द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

हे देवि ! पाप करके भी जो मुझे इस मन्त्र द्वारा स्मरण करता है वह समस्त पापोंसे छूटकर मेरे लोकको प्राप्त होता है ॥ ३३ ॥

इति श्रीसिद्धशंकरतंत्रभाषाटीकायां द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

तृतीयः पटलः ।

शंकर उवाच ।

तत्पुरुषस्य वक्ष्मामि फलं तच्छृणु सुव्रते ।
बिल्वोदुम्बरयोर्हुत्वा समिच्छतसहस्रकम् ॥ १ ॥
ब्रह्महत्याविनिर्मुक्तो मंत्रेणानेन सुव्रते ॥ २ ॥

शिवजी बोले—हे सुव्रते ! मैं तत्पुरुषके मन्त्रका फल कहता हूं तिसको सुनो, बेल और गूलरकी एक लाख समिधों द्वारा उक्त मन्त्रसे हवन करनेसे ब्रह्महत्या दूर होजाती है ॥ १-२ ॥

गृहीत्वा दक्षिणे कर्णे अजां रात्रौ सुनिर्भयः ।
लिंगस्य दक्षिणामूर्तेर्मासमेकं तु यक्षिणी ॥ २ ॥
समागत्य सुरूपाढ्या सर्वान्कामान्प्रयच्छति ॥३॥

भय रहित हुवा साधक रात्रिमें बकरीका दहना कान पकडकर दक्षिणामूर्ति लिङ्गके समीप तत्पुरुष मंत्रको जपे तो एक महीनेमें परम मनोरम रूपसे यक्षिणी आकर समस्त कामनाओंको पूर्ण कर देती है ॥ २ ॥ ३ ॥

करवीरस्य पुष्पाणि घृतयुक्तानि जुह्वतः ।
नाम्ना स्त्री वशमायाति सप्तरात्रात्तदग्रतः ॥ ४ ॥

घृतके साथ कनेरके फूलोंद्वारा जिस स्त्रीकी इच्छा कर हवन करै तो वह स्त्री निःसन्देह सप्तरात्रिमें उसके पास आजाती है ॥ ४ ॥

कर्णिकारस्य पुष्पाणां देवगंधर्वयोषितः ।
ददंतीष्टं समागत्य मनसो वत्सरार्द्धतः ॥ ५ ॥

जो कनेरके फूलोंसे छः महीने हवन करता है तो देवता गंधर्वोंकी स्त्रियें स्वयं आकर छः मासमें उसकी मनोकामना पूर्ण करती हैं ॥ ५ ॥

प्रतिदिनं जपेद्यस्तु लिंगमाश्रित्य यत्नतः ।
देहेनानेन मेधावी देवि मां प्रतिपद्यते ॥ ६ ॥

जो तत्पुरुष मंत्रको लिंगके निकट प्रतिदिन जपता है हे देवि! वह बुद्धिमान् इसी देहसे मुझको प्राप्त होताहै॥६

आदित्याभिमुखो भूत्वा जपन्पापैः प्रमुच्यते।
सलवणांस्तिलान् हुत्वा वशमानयते रिपून्॥७॥

आदित्यके सामने मुखकर मंत्र जपता हुआ सब पापोंसे छूट जाताहै, तिल और लवण मिलाकर हवन करनेसे शत्रुओंको वशमें करलेते हैं ॥ ७ ॥

सघृतेन यशःकामी सदूर्वयाऽऽयुरेव च।
मार्जनेनामयान् हंति सर्षपे रक्षणं सदा ॥ ८ ॥

यशकी इच्छा करनेवाले घृतसे और आयुकी इच्छा-वाले दूर्वासे हवन करनेसे यश और आयु पाते हैं मार्जन करनेसे रोग दूर हो जाते हैं और सरसोंसे रक्षा होती है ८॥

चंद्रसूर्योपरागे तु जपेदष्टसहस्रकम्। लिंगस्य
दक्षिणामूर्तेः स कामानीप्सितांल्लभेत् ॥ ९ ॥

चंद्र सूर्यके ग्रहणमें आठ हजार दक्षिणामूर्ति लिंगके निकट जप करनेसे इच्छित मनोरथोंको प्राप्त करता है९

सततं जपते यो वै वर्षं वर्षार्द्धमेव च ।
क्षिप्रं सिद्धिं ददात्याशु स्वयमागत्य कन्यका ॥१०

जो निरन्तर एक वर्ष वा छः महीने जप करता है, तो यक्षिणी स्वयं आकर उसको सिद्धि देतीहै ॥ १० ॥

पंचगव्यकृताहारो जपन् स्वमनुगच्छति ।
मिताशी यो जपेन्नित्यं मोक्षं याति न संशयः॥११

जो पञ्चगव्यका आहार करके जपता है वह आत्म, ज्ञानको प्राप्त होताहै और जो थोडा भोजन करके जपता है वह निःसन्देह मुक्तिको प्राप्त होताहै ॥ ११ ॥

देवस्य दक्षिणामूर्तेर्जपेद् वा सततं सुधीः ।
वत्सरादहमेवासौ सिद्धिं यच्छामि वर्णिनि ॥१२॥

जो बुद्धिमान् दक्षिणामूर्ति देवके निकट निरन्तर जपता है, हे वरवार्णिनि ! एक वषमें मैं उसको सिद्धि देता हूं ॥ १२ ॥

पर्वण्येव जपेद्यस्तु सर्वक्रतुफलं लभेत् ।
सर्वे सत्वा वशमीयुः श्मशाने जपतः शुभे ॥ १३ ॥

जो पर्वमें जप करता है वह समस्त यज्ञोंके फलको पाता है, श्मशानमें जपनेसे सम्पूर्ण जीव वशीभूत हो जाते हैं ॥ १३ ॥

शान्तिकामो लभेद्धुत्वा शान्तिं तु सितसर्षपान् ।
रक्तपुष्पैर्वशे कार्ये कृष्णपुष्पैस्तु मारणे ॥ १४ ॥

सफेद सरसोंसे हवन करनेपर शांति होती है, लाल फूलोंसे वशीकरण और काले फूलोंसे हवन करनेपर मारणकी सिद्धि होती है ॥ १४ ॥

विद्वेषे पीतपुष्पाणि धूम्राण्युच्चाटने तथा ।
एतदेव जपेत्सर्वं मन्त्रं सर्वार्थसाधकम् ॥ १५ ॥

विद्वेषणमें पीले फूल और उच्चाटनमें धूम्र पुष्पोंका प्रयोग करै इस प्रकारसे सर्व अर्थ सिद्ध करनेवाले मन्त्रका जप और हवन करै ॥ १५ ॥

सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवं याति न संशयः ॥ १६ ॥

इति श्रीसिद्धशङ्करतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमे तत्पुरुषविधानो नाम तृतीयः पटलः समाप्तः ॥ ३ ॥

ऐसा करनेसे साधक सब पापोंसे मुक्त हो निःसंदेह शिवलोकको प्राप्त होता है ॥ १६ ॥

इति सिद्धशंकरतंत्रभाषाटीकायां तृतीयः पटलः समाप्तः ॥३॥

चतुर्थः पटलः ।

शंकर उवाच ।

न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासो विधीयते ।
अघोरस्मरणाद्देवि सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ १ ॥

शिवजी बोले—हे देवि! केवल अघोर देवके स्मरणसे ही सब पाप दूर हो जाते हैं, अघोर मन्त्रके जपमें तिथि नक्षत्र वा विशेष उपवासादिकी आवश्यकता नहीं है ॥ १ ॥

स्नात्वादौ पञ्चगव्येन शिवमभ्यर्च्य मन्त्रतः ।
जपेदयुतमेकं तु सहस्रं जुहुयाद्घृतम् ॥ २ ॥

पहले पंचगव्यसे स्नान करके मंत्रद्वारा शिवका पूजन कर दश हजार जप करके घृतकी आहुति दे ॥ २ ॥

पुरश्चरणमेतत्तु त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥ ३ ॥

यह पुरश्चरण त्रिलोकीको वशीभूत करसकताहै ॥ ३ ॥

मण्डूकस्य वसां गृह्य चतुर्दश्यामथाष्टमीम् ।
देवस्य दक्षिणे स्थित्वा जप्त्वा चाष्टसहस्रकम् ॥४॥
वर्तिकां पद्मसूत्रस्य कपालधृतकज्जलम् ।
तेनैवांजितनेत्रस्तु अदृश्यो जायते नरः ॥ ५ ॥

चतुर्दशी वा अष्टमी तिथिमें मेंढककी चर्बी लेकर कमलकी डंडीके तारोंकी बत्ती बनाय खोपड़ीमें काजल पाडे, फिर देवदेवके दक्षिण ओर स्थित हो आठ हजार जप करके ॥ ४ ॥ उसका अंजन नेत्रोंमें लगानेसे मनुष्य अदृश्य हो जाता है ॥ ५ ॥

कुसुंभतैलमथवा पूर्वेण विधिना कृतम् ।
वर्ति कृत्वाऽर्कसूत्रस्य कज्जलं गृह्य यत्नतः ॥
तेनैवांजितनेत्रस्तु अदृश्यो भवति क्षणात् ॥ ६ ॥

कुसुंभके तेल अथवा मेढककी चर्बीके दीपकमें आककी कपासकी बत्ती बनाय यत्नसे खोपड़ीमें काजल पारै, फिर उसे नेत्रोंमें आंजनेसे मनुष्य तत्काल अदृश्य होजाता है ॥ ६ ॥

ब्रह्मेन्द्रविष्णुलोकांस्तु देहेनानेन गच्छते ।
सर्वज्ञः सर्वदर्शी च दिव्यरूपस्तु जायते॥ ७ ॥

ब्रह्मलोक, इन्द्रलोक और विष्णुलोकमें इसी देहसे जानेकी शक्ति होजाती है और वह साधक सर्वज्ञ, सर्वदर्शी एवं दिव्यरूपी होजाता है ॥ ७ ॥

स्रोतोंजनं समादाय प्लक्षपत्रेषु सप्तभिः ।
पिधाय हवनं कुर्यात् कृष्णैर्वाथ सितैस्तिलैः ॥ ८ ॥
अयुतं जितनेत्रस्तु सोऽदृश्यः प्रचरेन्महीम् ॥ ९ ॥

शुद्ध स्रोतोंजनको लेकर पाकड़के पत्तेमें रख सभी-चीत कर्पास सूत्रसे कल्पितकर नेत्रोंमें लगाय काले वा सफेद तिलोंसे दश हजार आहुतिद्वारा हवन करनेसे तीनों लोकोंके नेत्रोंको वंचितकरतेहुएकी पृथ्वीपर विचरनेकी शक्ति होजाती है ॥ ८ ॥ ९ ॥

तथा गोरोचनां गृह्य सहस्रेणाभिमंत्रितम् ॥ १० ॥

इसी प्रकार गोरोचनको लेकर सहस्र मंत्रसे अभि-मंत्रितकर तिलक लगानेस अदृश्य होजाता है ॥ १० ॥

शिवस्यैव हि निर्माल्यं सहस्रेणाभिमन्त्रितम् ।
धूपनं तेन रक्षांसि भूतवेतालसुग्रहाः ॥
विनायकास्तु डाकिन्यो ज्वरापस्मारसंभवाः ।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ११ ॥

शिवजीके निर्माल्यको हजार मंत्रसे अभिमंत्रितकर धूप बतादे उससे राक्षस, भूत, वैताल, ग्रह, विनायक, डाकिनी, ज्वर और अपस्मारादि सब रोग नष्ट होजाते हैं, यह मैं सत्य सत्यही कहता हूं ॥ ११ ॥

श्मशानमध्यमास्थ य शवं गृह्य रुजाक्षतम् ।
सुसंस्नाप्य गंधतोयैः स्थापयेन्मडले बुधः ॥ १२ ॥

श्मशानके मध्यमें स्थित हो, शवको ग्रहण करै जो रोगसे मृतक न हो, उसे स्नान कराय गंधादि जलसे प्रोक्षणकर मंडलमें स्थापन करै ॥ १२ ॥

गंधपुष्पैरलंकृत्य छादयेच्छुक्लवाससा ।
शवे हस्तं समाधाय कृष्णां चतुर्दशीमनु ॥ १३ ॥

गंध और पुष्पोंसे अलंकृत करके श्वेत वस्त्रसे आच्छादन करै, कृष्ण चतुर्दशीको उसपर हाथ रखकर ॥ १३ ॥

कपिलानवनीतेन म्रक्षेदष्टशतं सुधीः ।
एवं तज्जपतो वेगात् समुत्तिष्ठति निर्भयः ॥ १४ ॥

कपिला गौके मक्खनसे आठ सौ वार मंत्र पढ़कर मलै इस भांति जप करनेसे वह निर्भय उठ बैठेगा ॥ १४ ॥

ब्रवीति किं ददामीति सिद्धोऽस्मीत्यहमेव ते ।
इत्युक्तश्चेप्सितान् कामान् ब्रवीति तत्र साधकः ॥ १५ ॥

और यह कहेगा कि, मैं तुझे क्या दूं—मैं तुझे सिद्धि दूं, ऐसा कहनेपर साधक अपने मनोरथोंकी प्रार्थना करै ॥ १५ ॥

स दत्त्वा पतते भूमौ निश्चेष्टो जायते क्षणात् ॥ १६ ॥

साधककी अभिलाषा पूरीकर वह मृतक पृथ्वीपर गिर पड़ेगा और क्षणमात्रमें चेष्टारहित हो जायगा ॥ १६ ॥

तालकं करवीरस्य रसेन परिमृक्षयेत् ।
कुर्यात् कृष्ण चतुर्दश्यां जपेदष्टसहस्रकम् ॥१७॥

कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके दिन हरतालको कनेरके रसमें खरल करता हुआ आठ हजार मंत्रको जपै ॥ १७ ॥

लिंगस्य दक्षिणे स्थित्वा तेनैवाङ्गं समालभेत् ।
अदृश्यो जायते सद्यो यथेष्टं गच्छतीति ह ॥१८॥

लिंगके दक्षिण ओर बैठकर उसे अंगमें लगानेसे साधक तत्काल अदृश्य होकर यथेच्छ गमन करता है १८

देवस्य दक्षिणामूर्तेः स्थित्वा लक्षं जपेद्यदि ।
दशांशेन तथा होमं बिल्वैः प्रकुरुते तु यः ॥
त्रिविधा जायते सिद्धिर्विषदृष्ट्या भमन्ति हि १९॥

दक्षिणामूर्ति देवके समीप स्थित होकर एक लाख मंत्र जपै और दशांश बेलपत्रसे हवन करै तो तीनों लोकोंके पदार्थोंके देखनेकी दृष्टि होजाती है और विष-दृष्टि होजाती है ॥ १९ ॥

विषदृष्टिवाले पुरुषके देखतेही ज्वरादि सब रोग नष्ट हो जाते हैं ॥

ज्वरादीनामयान् सर्वानपि कीटपतंगकान् ।
सततं हि जपेद्यस्तु तन्नास्ति यन्न साधयेत् ॥
पातालस्वर्गपुटकान् देहेनानेन गच्छति ॥ २० ॥

ज्वरादि सब रोग और कीट पतंगोंके दंश दूर होजाती हैं निरन्तर जप करनेसे ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो उस साधकको न मिल सकै, पाताल और स्वर्गके स्थानोंमें साधक इसीदेहसे चला जासक्ता है ॥ २०

ब्रह्मचर्येण वै मासं पञ्चगव्यकृताशनः ।
जप्त्वा तु सर्वपापैस्तु मुच्यते ब्रह्महत्यया ॥ २१ ॥

ब्रह्मचर्यसे रहकर पंचगव्यका भोजन करता हुआ एक मासतक जप करनेसे सब पापोंसे तथा ब्रह्महत्यासे भी साधक छूट जाताहै ॥ २१ ॥

एकलिंगं समाश्रित्य जपेन्मूलफलाशनः ।
भिक्षाहारोऽपि षड्मासात्प्रत्यक्षं मां स
पश्यति ॥ २२ ॥

एकलिंगके समीप स्थित हो फलमूलका आहार

करनेवाला साधक वा भीख मांगकर आहार करनेवाला साधक छः महीने निरन्तर जप करनेसे मेरा दर्शन प्राप्त करताहै ॥ २२ ॥

यानि कानि च पापानि घोराणि विविधानि च ॥ शतजाप्येन देवेशि भस्मसाद्यान्ति नित्यशः ॥ २३ ॥

इत्यघोरकल्पः ॥ १ ॥

जितने नानाप्रकारके घोर पाप हैं हे देवि ! इस मंत्रके सौवार जपनेसे निःसन्देह नष्ट होजाते हैं ॥ २३ ॥

अघोर कल्प पूर्ण हुआ ॥ १ ॥

शृणु त्वं वामदेवस्य कथयिष्यामि सुव्रते ।
लिङ्गस्य दक्षिणामूर्तेर्जपेदष्टसहस्रकम् ॥ २४ ॥
पञ्चगव्येन च स्नात्वा जुहुयादयुतं पुनः ॥ २५ ॥

हे सुव्रते ! अब वामदेव कल्पकी विधि कहताहूं, सुनो—दक्षिणामूर्ति लिंगके निकट आठ हजार मन्त्र जपै और पंचगव्यसे स्नानकर दश हजार आहुति दे २४॥२५॥

श्वेतपुष्पैः सुरक्तैर्वा पीतैश्चैव हि शोभनैः ।
पुरश्चरणकं कृत्वा ततः सिद्ध्यति नान्यथा ॥ २६ ॥

सुंदर सफेद वा पीले वा लाल फूलोंसे आहुति द्वारा पुरश्चरण करनेसे निःसंदेह सिद्ध होजाता है ॥ २६ ॥

त्रिरात्रं समुपोष्याथ भासस्यास्थि सुमन्त्रयेत् ।
बाहौ बद्धा त्वदृश्यत्वं कुरुते भूतराक्षसान् ॥
मनुष्यादीन्सक्रव्यादान् वशित्वं नात्र संशयः॥२७॥

तीन रात व्रतकर भास पक्षीकी हड्डीको अभिमंत्रित कर भुजामें बांधनेसे अदृश्य होजाता है, एवं भूत और राक्षसोंको तथा मनुष्य और क्रव्यादादिकोंको निःसंदेह वशीभूत करता है ॥ २७ ॥

कपिलागोमयेनैव कृत्वा पुत्तलिकां ध्रुवम् ।
मंत्रेणानेन संस्थाप्य घृतस्यैवाहुतीर्हुनेत् ॥ २८ ॥

कपिलाके गोबरसे एक पुतली बनाय उसे उक्त मंत्रसे स्थापन कर घृतकी आहुतिसे हवन करे ॥ २८ ॥

नाम्नामष्टौ सहस्राणि यक्षिणी राक्षसी तथा ।
श्रियं वाप्यानयत्याशु नात्र कार्या विचारणा ॥२९॥

यक्षिणी वा राक्षसी जिसके नामसे आठ हजार आहुति साधक दे, तो वही अनेक प्रकारकी लक्ष्मी साधकके निकट निःसन्देह लाकर देती हैं ॥ २९ ॥

सुरभिपुष्पाण्यष्टौ सहस्राणि देवस्योपरि निधापयेत् । सर्वान्कामानवाप्नोति ॥ ३० ॥

आठ हजार सुगंधित फूल मन्त्रपूर्वक देवके ऊपर चढ़ानेसे समस्त कामनायें पूर्ण होती हैं ॥ ३० ॥

यवव्रीहिहोमेन धनपतिर्भवति ॥ ३१ ॥

जौ और साठीके चावलोंसे हवन करनेसे धनपति होता है ॥ ३१ ॥

शतसहस्रं जप्त्वाथ लिंगमूर्द्धनि निक्षिपेत् ।
ततः श्रीः स्वयमागत्य सर्वान् कामान् ददाति च ॥ ३२ ॥

एक लाख मंत्र जपकर शिवलिंगके ऊपर आगे कहे फूल चढ़ानेसे लक्ष्मी स्वयं आकर साधककी समस्त कामनाओंको पूर्ण करती है ॥ ३२ ॥

नागपुष्पपुन्नागाशोकपाटलाकर्णिकारादीनि कथितानि ॥ ३३ ॥

नागपुष्प, नागकेसर, अशोक, पाटल और कनेरादिके फूल चढावे ॥ ३३ ॥

अथ सर्गस्य घृतमधुमिश्राहुतिसहस्रं जुहुयात् । अर्थलाभो भवति ॥ ३४ ॥

सृष्टिबीज सहित वामदेव मंत्रसे घृत और मधु मिलाकर हजार आहुति देनेसे अर्थलाभ होता है ॥ ३४ ॥

सूत्रेण रक्षां करोति सर्षपैः सर्वग्रहेभ्यो मुञ्चापयति ॥ ३५ ॥

मंत्र पढकर जो सूतमें गांठ देकर (गंडा बनाताहै उससे सब प्रकारकी रक्षा होती है और जो मंत्र पढ

कर सरसौं चारों ओर बखेरता है, उससे सब ग्रहोंकी बाधा दूर होजाती है ॥ ३५ ॥

अभिमंत्रितसर्षपैः दिशां बंधनं करोति उदकेन वशमानयति ॥ ३६ ॥

मंत्रद्वारा अभिमंत्रित सरसोंसे दिशाबंधन किया जाता है, अभिमंत्रित जलके द्वारा वशीकरण किया जाता है ॥ ६६ ॥

सर्वपुष्पाभिषेकं कृत्वाऽऽत्मानमभिषिंचेदलक्ष्मीं नाशयति ॥ ३७ ॥

सब पुष्पोंसे अभिषेककर अपने शरीरको प्रोक्षण करनेसे अलक्ष्मीका नाश होता है ॥ ३७ ॥

तगरमल्लिकाकुंदाशोकसौगंधिकाभिषेकेण श्रीर्भवति, गतराज्यं समानयति ॥ ३८ ॥

तगर, चमेली, कुन्द, अशोक, सौगन्धिक (कह्लार पुष्करमूल) वा वसीरके अभिषेकसे लक्ष्मी स्वयं प्राप्त होतीहै और गये हुए राज्यकी प्राप्ति होती है ॥ ३८ ॥

प्रतिपदमारभ्य सर्वशुक्लपुष्पाणां प्रतिदिन-
मष्टसहस्रं जुहुयात् पौर्णमासीं यावत्ततो भवा-
नीश्वरः सर्वकामावाप्तिं ददाति वामदेवो भग-
वानायुष्यप्रदः कामप्रदश्चेति ॥ ३९ ॥

प्रतिपदासे लेकर पौर्णिमासीतक प्रतिदिन आठ हजार सफेद फूलोंका हवन करनेसे भवानीशङ्कर सब कामकी प्राप्ति करतेहैं भगवान् वामदेव आयु और सर्व कामनाओंके पूर्ण करनेवाले हैं ॥ ३९ ॥

संग्रामे शस्त्रसंनद्धपुरुषमभिमन्त्रयेत् ।
सर्वत्रापराजितो भवति ॥ ४० ॥

संग्राममें शस्त्रधारी पुरुषको इस मन्त्रसे अभिमंत्रित करै तो वह कहीं नहीं हारताहै ॥ ४० ॥

सुगन्धगन्धैर्भगवन्तं विलिप्य सुगन्धपुष्पै-
रभ्यर्च्याष्टशतं जुहुयात् स कर्म कुर्वाणो
लक्ष्मीवान् भवति ॥ ४१ ॥

भगवान्के ऊपर सुगन्ध गन्धका विलेपन कर सुगं-धित पुष्पोंसे पूजन करके आठसौ आहुति देनेसे साधक धनी होताहै ॥ ४१ ॥

तपते वर्षते चैव एष देवो महेश्वरः ।
सृजते सर्वभूतानि सर्वसिद्धिप्रदो हरः ॥ ४२ ॥

इति वामदेवकल्पः ॥ २ ॥

तपने और वर्षने जप करनेसे यह सर्वसिद्धियोंके देनेवाले देव महेश्वर सम्पूर्ण प्राणियोंकी सृष्टि करतेहैं ४२

वामदेवकल्प समाप्त हुआ ॥ २ ॥

ईश्वर उवाच ।

अथ सद्योजातेन मंत्रेण कृष्णयोरेकतरेण
त्रिरात्रोपोषितो भूत्वाऽष्टसहस्रं जपेत् ॥ ४३ ॥

महादेवजी बोले-कृष्णयजुर्वेदमें कहेहुए " सद्यो-जातं-भवेभव" इत्यादि सद्योजातके किसी एक मंत्रको तीन रात व्रत करके आठ हजार जपै ॥ ४३ ॥

आत्मार्थं जुहुयाद्यदिच्छति तल्लभेत् ॥ ४४ ॥

अपने निमित्त हवन करनेसे जिस वस्तुकी इच्छा की जाय, साधककी वही इच्छा पूर्ण होती है ॥ ४४ ॥

पुष्पाष्टसहस्रं जुहुयान्मधुघृताक्तं यक्षराक्षसाप्सरसः स्त्रिय आगच्छन्ति रसरसायनसिद्धीः प्रयच्छंति ॥ ४५ ॥

आठ हजार पुष्प, मधु और घृत युक्तके हवन करनेसे यक्ष, राक्षस, अप्सरा स्त्रियें आती हैं और रस रसायनकी सिद्धि देती हैं ॥ ४५ ॥

शिवस्य महतीं पूजां कृत्वा व्यपगतकामक्रोधलोभमोहो भिक्षाभुग् वा मौनी शुक्लवासा जितेंद्रियः ॥ ४६ ॥

शिवजीकी बडी पूजाकर काम, क्रोध, लोभ और मोहसे रहित हो भिक्षाभोजी, मौनी, शुक्लवस्त्रधारी जितेंद्रिय हो ॥ ४६ ॥

गुग्गुलगुटिकाभिरष्टसहस्रं जुहुयादष्टगुणमैश्वर्यं भवति ॥ ४७ ॥

गूगलकी गुटिकावोंसे आठ हजार हवन करनेपर आठों लक्षणोंसे युक्त अणिमादिक आठ ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं ॥ ४७ ॥

अथ देवस्य दक्षिणामूर्तेः शत्रुनाम्ना जपेत् । शत्रुर्न भवति ॥ ४८ ॥

दक्षिणामूर्ति देवके निकट शत्रुका नाम लेकर जप करनेसे शत्रु नहीं रहता नष्ट होजाता है ॥ ४८ ॥

अथ मधुपयसाऽष्टसहस्रं जुहुयात् । राज्यच्युतो राज्यं लभेत ॥ ४९ ॥

मधु और दूधसे आठ हजार आहुति देनेसे राज्यसे भ्रष्ट हुआ राजा पुनः राज्यको प्राप्त करता है ॥ ४९ ॥

अथ बिल्वार्कोदुम्बराश्वत्थानां समिदष्टसहस्रं जुहुयात् । पृथ्वीराज्यं प्राप्नोति ॥ ५० ॥

बेल, आक, गूलर और पीपलकी आठ हजार समिधोंद्वारा हवन करनेसे पृथ्वीके राज्यको प्राप्त होता है ॥ ५० ॥

अथ सहस्रमभिमंत्र्यात्मनोऽविकलो भवति ॥५१॥

हजार मन्त्रसे अपनेको अभिमंत्रित करनेसे आरोग्य होता है ॥ ५१ ॥

अथ वस्त्रमाल्याभरणादीनभिमंत्र्य सौभाग्यं भवति ॥ ५२ ॥

वस्त्र माला और आभूषणादिको अभिमंत्रित कर धारण करनेसे सौभाग्यवान् होता है ॥ ५२ ॥

अथ वटाधः स्थित्वा शतसहस्रं जपेत् यक्षिणी सिद्ध्यति । अन्तर्जले पंचसहस्रं जपेद्ब्रह्महत्यादिपापैर्विमुक्तो भवति ॥ ५३ ॥

वटके नीचे स्थित हो एकलक्ष मन्त्र जपनेसे यक्षिणी सिद्ध होती हैं और जलमें स्थित हो पाँच हजार मन्त्र जपनेसे ब्रह्महत्या दूर होती है ॥ ५३ ॥

महापापानि पापानि तथोपपातकानि तु ।
लक्षार्द्धार्द्धतदर्द्धेन नश्यन्ति शतशस्तथा ॥ ५४ ॥

महापातक, उपपातक और सैकडों प्रकारके पाप लाख या पचास हजार वा पचीस हजार मन्त्रके जपनेसे सम्पूर्ण नष्ट हो जाते हैं ॥ ५४ ॥

एकलिंगे जपेल्लक्षं देवः प्रत्यक्षतामियात् ।
निष्कामोऽपि जपेदेवं ज्ञानी सर्वज्ञतां व्रजेत् ॥ ५५ ॥

इति सद्योजातकल्पः ॥ ३ ॥

एक लिङ्गके निकट लक्ष मन्त्र जपनेसे महादेवजी प्रत्यक्ष हो जाते हैं निष्काम मंत्र जपनेसे साधक ज्ञानी और सर्वज्ञ हो जाता है ॥ ५५ ॥

इति सद्योजात कल्प समाप्त हुआ ॥ ३ ॥

स्वयम्भूबाणलिंगे वा ज्योतिर्लिंगेऽपि सुव्रते ।
पूर्वसेवां प्रकुर्वीत भक्त्या तद्गतमानसः ॥ ५६ ॥

हे सुव्रते ! स्वयंभू बाणलिंग अथवा ज्योतिर्लिंगकी भक्तिसे और मन लगाकर प्रणाम और सेवा करे ॥ ५६ ॥

भुञ्जानः प्रमितं शुद्धं सर्वभूतहिते रतः ।
ब्रह्मचर्यरतो मौनी भूमिशायी जितेन्द्रियः॥५७॥
साधको देशिको वापि पूर्वसेवां समारभेत् ॥५८॥

शुद्ध और परिमितभोजी, सब प्राणियोंका हितैषी, ब्रह्मचर्यमें लीन, मौनी, पृथ्वीपर शयन करनेवाला और जितेन्द्रिय साधक वा देशिक प्रथम सेवा करै॥५७५८॥

योगाभ्यासेन वा योगी जपध्यानपरायणः ।
प्रदक्षिणानमस्कारैः क्रियायोगेन शङ्करः ।
भक्तिस्तु कारणं तत्र भक्तिग्राह्यो महेश्वरः ॥५९॥

अथवा योगीके जप और ध्यानद्वारा योगाभ्यासमें लीन होनेपर प्रदक्षिणा और नमस्कार करनेसे शिवजी प्रसन्न होतेहैं परन्तु इसमें भक्ति मुख्य कारण है भक्तिसेही शिवजीकी प्राप्ति हो सक्तीहै ॥ ५९ ॥

सर्वाश्रमाणां वर्णानां बालवृद्धस्त्रियामपि ।
आस्तिकः श्रद्दधानश्च अहन्यहनि भावतः ॥
सिद्ध्यते हि किमाश्चर्यं प्रसादाच्छङ्करस्य वै ६०

सम्पूर्ण वर्णाश्रम बाल वृद्ध स्त्रियें कोई हो आस्तिक और श्रद्धावान् मनुष्य प्रतिदिन भक्ति करनेसे शिवजीके प्रसादसे निःसन्देह सिद्ध होजाता है ॥ ६० ॥

ध्यात्वाऽऽत्मानं प्रतिशिवं सर्वभूतेषु संस्थितः ।
जपेन्मन्त्रन्तु यो मन्त्री सर्वं सिद्धयति नान्यथा ॥ ६१ ॥

समस्त प्राणियोंमें तथा अपनेमें स्थित शिवजीको जानै ऐसे जानकर जो मन्त्रज्ञाता मंत्र जपता है उसके निःसन्देह सब मनोरथ सिद्ध होतेहैं ॥ ६१ ॥

शिवोऽहं सर्वभूतोऽहं जगत्स्थावरजङ्गमम् ।
एवं सम्भावयन् योगी सिद्धयते वत्सरार्द्धतः॥६२॥

मैं शिव हूं मैं सर्वभूत हूँ स्थावर जंगम जगत् मेराही रूप है यह भावना करता हुआ योगी छः महीनेमें सिद्ध होजाता है ॥ ६२ ॥

शिवैकनिष्ठस्त्वनुयोगदक्षः
सर्वेषु भूतेषु सदा स्थितोऽस्मि ।

ध्यायंजपन् वा मनसा यतात्मा
सोऽनेन देहेन भवेच्छिवो हि ॥ ६३ ॥

शिवमें ही निष्ठा करनेवाला योगमें दक्ष सब प्राणियोंमें मैंही सदा स्थित हूं ऐसा ध्यान करके मनमें विचारता हुआ जपता हुआ नियतात्मा योगी इस देहसेही शिव होजाता है ॥ ६३ ॥

वक्ष्येऽहं मंत्रजां सिद्धिं तच्छृणुष्व वरानने ।
नदीनदसमुद्रे वा पर्वतेषु गृहेषु च ॥ ६४ ॥

हे वरानने ! नदी नद समुद्र पर्वत और घरमें मंत्र-द्वारा जो सिद्धि प्राप्त होती है उसको सुनो ॥ ६४ ॥

पश्चिमाभिमुखं यत्र लिंगं तिष्ठति भामिनि ।
कपिलागोमयेनैव उपलिप्य प्रयत्नतः ॥ ६५ ॥

हे भामिनि ! जहां पश्चिमकी ओर शिवलिंग स्थित हो तहां यत्नसे कपिला गौके गोबरसे लीपै ॥ ६५ ॥

पुनस्तत्पञ्चगव्येन स्नात्वा सद्येन मन्त्रयेत् ।
स्थापयेद् वामदेवेन दिशासु विदिशासु च ॥ ६६ ॥

फिर पंचगव्यसे स्नान कराय सद्योजातके मंत्रोंसे अभिमंत्रितकर वामदेवोंके मन्त्रोंसे दिशा विदिशाओंमें स्थापन करै ॥ ६६ ॥

पञ्चामृतादिभिस्तोयैः स्नात्वा तत्पुरुषेण वै ।
गन्धपुष्पादिकं सर्वं वस्त्रालंकारभूषणम् ॥ ६७ ॥

तत्पुरुष मन्त्रसे मंत्रितकर पंचामृतके जलोंसें स्नान करावै गंधपुष्पादि सम्पूर्ण वस्तु वस्त्र अलंकार और भूषण ॥ ६७ ॥

अघोरेण समं कृत्वा ईशानं मूर्ध्नि विन्यसेत् ।
ईशानेनार्चयेन्नित्यं सिद्धिकामो ह्यतंद्रितः ॥६८॥

अघोर मन्त्रसे प्रदानकर ईशानके शिरपर धरै और सिद्धिकी कामना करनेवाला नित्य ईशान मंत्रसे पूजन करै ॥ ६८ ॥

स्वयंभूबाणलिंगं वा देवासुरप्रतिष्ठितम् ।
सर्वलक्षणहीनञ्च स्फुटितं शीर्णमेव च ॥
सिद्धिदं तद्विजानीयाज्जीर्णोद्धारं न कारयेत्॥६९॥

स्वयंभू बाणलिंग देव व असुरका प्रतिष्ठित किया हुआ सर्वलक्षणहीन, भग्न और विशीर्ण हुआभी सिद्धिका देने वालाहै, इसकारण उसका जीर्णोद्धार न करै ॥ ६९ ॥

ईशानं यो जपेन्नित्यं लिङ्गमाश्रित्य यत्नतः ।
तस्य सिद्धिर्न सन्देहः षण्मासैर्वत्सरेण वा ॥ ७० ॥

जो लिंगके समीप यत्नसे ईशान मन्त्रको जपता है, उसको एक वर्ष वा छः महीनेमें निःसन्देह सिद्धि प्राप्त होजातीहै ॥ ७० ॥

नाभिमात्रे जले विश्य जपेन्मंत्रं समाहितः ।
समाऽभिजायते दृष्टिरीशानेन न संशयः ॥ ७१ ॥

नाभिमात्र जलमें स्थित होकर जो सावधानीसे मंत्र जपता है उसकी दृष्टि ईशानके समान संपूर्ण विषयिणी हो जाती है ॥ ७१ ॥

अभिमंत्र्याष्टसाहस्रैः क्षिपेद्बीजान्यशेषतः ।
क्षेत्रं स्यात्सस्यनिष्पन्नं नोपद्रवभयं भवेत् ॥७२॥

जो आठ हजार मन्त्रसे अभिमन्त्रितकर बीजोंको डाले तो उसके खेतमें बहुत धान्य उत्पन्न हो और किसी प्रकारके उपद्रवका भय नहीं रहता है ॥ ७२ ॥

क्षीरवृक्षसमिद्भिस्तु हुत्वा शान्तिर्भवेदिह ।
औपसर्गिकदोषाणां न भयं विद्यते क्वचित् ॥७३॥

क्षीरवृक्ष (गूलर) की समिधोंद्वारा हवन करनेसे शान्ति होती है और किसी प्रकारके उपसर्गके दोष नहीं रहते हैं ॥ ७३ ॥

पर्वताग्रे समारुह्य जपेन्मंत्रमतंद्रितः ।
देहेनानेन देवेशं वरदं पश्यते वरम् ॥ ७४ ॥
सर्वपापैर्विमुक्तः स्याद्यो जपेल्लक्षमाहृतः ॥ ७५ ॥

पर्वतकेअग्रभागमें स्थित हो सावधानीसे मन्त्रको जपै तौ इसी देहसे वरदेनेवाले देवेशका दर्शन करेगा लक्षमात्र जपकरनेसे सब पापोंसे मुक्त हो जाता है ॥७४॥७५॥

अन्नं भुंजञ्जपेद्यस्तु तेजस्वी जायते सदा ।
प्रत्यहं शतमेकन्तु जपेत्सिद्धिमवाप्नुयात ॥७६॥

जो अन्नका भोजन करता हुआ जपता है, वह सदा तेजस्वी होता है, प्रतिदिन सौ वार मन्त्र जपनेसे सिद्धिको प्राप्त होता है ॥ ७६ ॥

कुभुक्तस्य कुपानस्य दिवास्वप्नस्य मेहतः ।
अस्थाने संमुखस्यापि द्विजगादेवयोषिताम् ॥
कुवातात्कुपथादेव ईशानं सततं स्मरेत् ॥ ७७ ॥

भूलसे गौ, ब्राह्मण और देवताके सन्मुख, अनुचित स्थानमें बुरे भोजन करनेवालेको, बुरा पान करनेवारेको, दिनमें सोनेवालेको, मलमूत्रके त्यागनेवालेको, बुरीबात कहनेवालेको और कुमार्गगामीको (अपने कर्मका बोध होतेही) निरंतर ईशान देवका स्मरण करना चाहिये ॥ ७७ ॥

एवं यो वर्त्तते नित्यं शिवपूजार्चने रतः ।
विमुक्तः सर्वपापेभ्यः शिवलोके महीयते ॥७८॥

इस भांति जो नित्य शिवजीके पूजनमें लीन रहता है, वह सब पापोंसे छूटकर शिवलोकको जाता है ॥ ७८ ॥

ईश्वर उवाच ।

पंचब्रह्मविधानन्तु यथावत्कथितं मया ॥ ७९ ॥

महादेवजी बोले-पंचब्रह्मका विधान मैंने यथावत् वर्णन किया ॥ ७९ ॥

सांप्रतं हि सुभक्तानां तथा शुद्धतपस्विताम् ।
ये पुनः शुद्धकर्माणः सुशुद्धतपसाऽन्विताः ॥८०॥
समर्चयंति मां नित्यं वेद्यास्तेऽपि यथा ह्यहम् ।
नातप्ततपसो यांति शिवलोकमनामयम् ॥ ८१ ॥

श्रेष्ठ भक्तोंको, शुद्ध तपस्वियोंको, शुद्ध कर्म करने, वालोंको शुद्ध तपसे युक्त पुरुषोंको ॥८०॥ और नित्य मेरी पूजा करनेवालोंको मेरे समान जानना चाहिये, तपके न करनेवाले अनामय शिवलोकको नहीं जाते हैं ॥८१॥

तपसा दिवि मोदंते प्रत्यक्षं देवतागणाः ।
ऋषयो मुनयश्चैव सत्यं जानीहि सुंदरि ॥ ८२॥

तपसेही प्रत्यक्ष देवताओंके गण स्वर्गमें प्रसन्न रहते हैं, हे सुन्दरि ! यह सत्य जानो कि ऋषि और देवता तपसेही प्रकाशित होते हैं ॥ ८२ ॥

सुदुर्धरं दुराराध्यं सुदूरं दुरतिक्रमम् ।
तत्सर्वं तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमम् ॥८३॥

दुर्धर, दुराराध्य, दूर और दुरतिक्रम जो वस्तु हैं वे सब तपसेही साध्य हैं, तपही दुरति क्रम है ॥ ८३ ॥

तपस्येव स्थितो ब्रह्मा नित्यं विष्णुरहं तथा ।
त्वं तथा देवि येनाहं प्राप्तो भर्त्ता सुदुर्लभः ८४॥

ब्रह्मा, विष्णु और मैं तपमें ही स्थित हूं, हे देवि ! तपसेही तुमने दुर्लभ मुझको अपने स्वामीके रूपमें प्राप्त किया है ॥ ८४ ॥

येन येन हि भावेन स्थित्वा यत् क्रियते तपः
तत्तत्संप्राप्यते देवि इह लोके न संशयः ॥ ८५ ॥

जिस जिस भावसे स्थित होकर तप किया जाय है-देवि ! वह वह अवश्य इस लोकमें प्राप्त होता है ॥८५॥

सात्त्विकं राजसं चैव तामसं त्रिविधं हि तत् ।
सात्त्विकं देवतानां हि यतीनामूर्ध्वरेतसाम् ॥
तामसं दानवानां हि रक्षसां क्रूरकर्मणाम् ८६ ॥

सत रज और तमके भेदसे तीन प्रकारका तप है, सात्त्विक तप देवता और ऊर्ध्वरेता यतियोंका है, तामस तप क्रूरकर्मा यक्ष, राक्षस और दानवोंका है ॥ ८६ ॥

निजं देहं समुत्पीड्य हिमातपसुदुः सहैः ।
तत्तपस्तामसं प्रोक्तं मनोऽभिप्रेतसाधनम् ॥८७॥

ठंढ और धूपसे अपनी देहको पीडित कर मनोरथ साधन करनेका नाम तामसी तप है ॥ ८७ ॥

जपं ध्यानन्तु देवानामर्चनं भक्तितः शुभे ।
सात्त्विकं तद्विनिर्दिष्टमशेषफलसाधनम् ॥८८॥

हे शुभे ! जो भक्तिसे देवताओंका ध्यान और पूजन करता है वह संपूर्ण फलका साधन करनेवाला सात्त्विक तप कहाता है ॥ ८८ ॥

इह लोके परे चैव क्रमान्मोक्षं व्रजेदतः ।
उत्तमं सात्त्विकं विद्याद्धर्म्मे बुद्धिः सुनिश्चला ८९

(वह) इस लोकमें और परलोकमें फल देकर अन्तमें मुक्तिका साधन करनेवाला है, धर्ममें निश्चल बुद्धि होनी उत्तम सात्त्विक तप है ॥ ८९ ॥

स्नानं पूजा जपो होमः शुद्धशौचमहिंसता ।
व्रतोपवासचर्या च मौनमिन्द्रियनिग्रहः ॥ ९० ॥

स्नान, पूजा, जप, होम, शुद्ध शौच, अहिंसा, व्रत, उपवास, पूजा, मौन, जितेन्द्रिय ॥ ९० ॥

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दानं क्षान्तिर्दमो दया ।
वापीकूपतडागानां प्रासादानां च कल्पना ॥९१॥

बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध, दान, शांति, दम, दया, बावडी, कूप, तडाग और प्रासादका निर्माण करणा९ १ ॥

कृच्छ्चान्द्रायणं यज्ञः सुतीर्थान्याश्रमाणि च ।
धर्म्मस्थानानि चैतानि सुखदानि मनीषिणाम् ॥

कृच्छ्र, चान्द्रायण, यज्ञ, श्रेष्ठ तीर्थ और आश्रम तथा धर्मस्थानका निर्माण यह सदा बुद्धिमानोंको सुखदेनेवाले हैं ॥ ९२ ॥

संक्रान्तिविषुवद्योगो नादमुत्क्रान्तियुञ्जताम् ॥९३॥

सक्रांति, विषुवयोग और मरण समयमें नादादिका साधन करै ॥ ९३ ॥

ध्यानं बिन्दुलयं ज्योतिरुन्मनीभावधारणा ।
रेचकः पूरकः कुंभः प्राणायामस्त्रिकः स्मृतः ९४

ध्यान, बिन्दुलय और ज्योति उन्मनी नाडीमें भावनाकर धारण करना, रेचक, पूरक, और कुम्भकके भेदसे तीन प्रकारका प्राणायाम होताहै ॥ ९४ ॥

नाडीसञ्चारविज्ञानं प्रत्याहारनिरोधनम् ॥
तुरीयं तद्वधो बुद्धिरणिमाद्यष्टसंयुतम् ॥ ९५ ॥

नाडीसंचारका ज्ञान, प्रत्याहारद्वारा वृत्तियोंका रोकना, अणिमायुक्त तुरीय विकल्पका स्पष्ट ज्ञान, वृत्तिका नाश निश्चयवाली बुद्धि ॥ ९५ ॥

काष्ठावस्था मृतावस्था हरिता चेति कीर्तिता ।
ज्ञानोपलब्धयो ह्येताः सर्वपापप्रणाशनाः ॥९६॥

काठकेसी अवस्था अर्थात् चेष्टा रहित होजाना, मृतावस्था अर्थात् निवृत्ति होजानी और हरितावस्था अर्थात् अपनेको सर्वव्यापकता प्राप्ति होजाना यह तीनों अवस्था सब पापोंकी नाश करनेवाली ज्ञानसे ही प्राप्त होती हैं ॥ ९६ ॥

नारीशय्यासनं यानं वस्त्रं गंधविलेपनम् ।
ताम्बूलभक्षणं पंच राजैश्वर्यविभूतयः ॥ ९७ ॥

नारीशय्यासन, सवारी, वस्त्र, गन्धविलेपन और ताम्बूलभक्षण यह पाँच राजऐश्वर्यकी विभूतियें हैं॥९७

हेमभारं तथा ताम्रगृहाश्वरत्नधेनवः ।
पाण्डित्यं वेदशास्त्राणि गीतनृत्यविभूषणम् ॥९८

सुवर्णभार, ताम्र, गृह, अश्व, रत्न, धेनु, पाण्डित्य, वेदशास्त्र, गीत, नृत्य और भूषण ॥ ९८ ॥

शंखवीणामृदंगाश्च गजेन्द्रच्छत्रचामरम् ।
भोगरूपाणि चैतानि एभी रक्तोऽनुयुज्यते॥९९॥

शंख, वीणा, मृदंग, गजेन्द्र, छत्र, चामर यह सब पदार्थ भोगरूप हैं, इनको पाकर पुरुष रागी होता है ॥ ९९ ॥

आदर्शवन्मुनिस्नेहस्तिलवत्तत्र पीड्यते ।
अरंगमेति चाप्येनं कुरुते ज्ञानमोहितः ॥१००॥

रागवान् उपरोक्त वस्तुओंसे दर्पणवत् तदाकार वृत्ति वाला होजाता है फिर स्नेहसे युक्त हो तिलवत् पीडित होताहै और इस रागके निकट विषय प्राप्त होताहै अज्ञानसे मोहित हो यह वैसेही करने लगता है ॥ १०० ॥

जानन्नपीह संसारे भ्रमते घटयंत्रवत् ।
सर्वयोनिषु दुःखार्त्तः स्थावरेषु चरेषु च ॥१०१॥

जानता हुआ भी जीव संसारमें घटीयन्त्रके समान घूमता रहताहै स्थावर जंगम सब योनियोंमें दुःखी हो भ्रमता है ॥ १०१ ॥

एवं योनिषु सर्वासु प्रतिक्रम्य क्रमेण तु ।
कालान्तरवशाद्याति मानुष्यमतिदुर्ल्लभम् १०२॥

इस भाँति क्रमसे सब योनियोंको भोगकर कालान्तरके वशसे अतिदुर्ल्लभ मनुष्यशरीरको प्राप्त होताहै ॥ १०२ ॥

व्युत्क्रमेणापि मानुष्यं प्राप्यते पुण्यगौरवात् ।
विचित्रा गतयः प्रोक्ताः कर्मणां गुरुलाघवात् १०३

सब योनियोंके बिना भोगेभी पुण्यके गौरवसे मनुष्यशरीर मिल जाता है, कर्मोंके गुरु लाघवसे प्राणीकी विचित्र गति है ॥ १०३ ॥

मानुष्यं यः समासाद्य स्वर्गमोक्षप्रसाधकम् ।
नाचरत्यात्मनः श्रेयः स मृतः शोचते चिरम् १०४

जो स्वर्ग, मोक्षका साधक मनुष्यशरीरको प्राप्त होकर अपना कल्याण नहीं साधता वह मृत्युको प्राप्त हो चिरकालतक शोच करता है ॥ १०४ ॥

देवासुराणां सर्वेषां मानुष्यमतिदुर्लभम् ।
तत्संप्राप्य तथा कुर्यान्न गच्छेन्नरकं यथा ॥१०५॥

देवता और असुर सबमें मनुष्य शरीर बडा दुर्लभ है, इसको प्राप्त होकर वह कार्य करै जिससे नरकको न जाना पडे ॥ १०५ ॥

स्वर्गापवर्गलाभाय यदि नास्ति समुद्यमः ।
सर्वस्य मूलं मानुष्यं तद्यत्नादनुपालयेत ॥१०६॥

स्वर्ग और अपवर्गकी प्राप्तिके निमित्त जो उद्यम नहीं करता है तो मनुष्यशरीर पानेसे क्या है? सबका मूल मनुष्यशरीर है इसका यत्नसे पालन करै ॥१०६॥

धर्ममूलं हि मानुष्यं लब्ध्वा सर्वार्थसाधकम् ।
यदि लाभे न यत्नः स्यान्मूलं रक्षेत्स्वयं ततः १०७

मनुष्यशरीर धर्मका मूलकारण है इस सर्वार्थके साधन करनेवाले शरीरको पाकर यदि कोई लाभ न होसके तो मूलकी तो अवश्य रक्षा करै जिससे मूल न जाती रहै ॥ १०७ ॥

मनुष्यत्वेऽपि विप्रत्वं यः प्राप्य च सुदुर्लभम् ।
न करोत्यात्मनः श्रेयःकोऽन्यस्तस्मादचेतनः १०८

मनुष्योंमें भी जो दुर्लभ ब्राह्मण होकर अपना कल्याण नहीं करता है उसकी बराबर मूर्ख कौन है? ॥१०८॥

द्वीपानामेव सर्वेषां भुज्यतेऽस्मिन्नुपार्जितम् ।
इतः स्वर्गश्च मोक्षश्च प्राप्यते समुपार्जितः ॥१०९॥

सब द्वीपोंके बीच जम्बूद्वीपमें उपार्जन किये कर्म

भोगे जाते हैं यहीं अच्छे कर्म करनेसे स्वर्ग और मोक्षकी प्राप्ति होती है ॥ १०९ ॥

देशेऽस्मिन्भारते वर्षे प्राप्य मानुष्यमध्रुवम् ।
न कुर्यादात्मनः श्रेयस्तेनात्मा खलु वंचितः ॥११०॥

इस भारतवर्ष देशमें अध्रुव मनुष्य शरीर पाकर जो अपना श्रेय नहीं करता है अवश्य उसने अपनी आत्माको वञ्चित किया है ॥ ११० ॥

कर्मभूमिरियं विप्र फलभूमिरसौ स्मृता ।
इह यत् क्रियते कर्म स्वर्गे तदनुभुज्यते ॥ १११ ॥

हे विप्र ! यह कर्मभूमि उत्तम फलकी भूमि कही गई है यहां जो कर्म कियाजाता है वह स्वर्गमें भोगा जाता है ॥ १११ ॥

यावत्स्वस्थशरीरस्तु तावद्धर्म्मं समाचरेत् ।
अस्वस्थश्चोदितोह्यन्यैर्नकिंचित्कर्तुमुत्सहेत ॥

जबतक शरीर स्वस्थ रहता है तबतक धर्म्मका आचरण करै जब अस्वस्थ शरीर होगा फिर कुछ भी न किया जायगा ॥ ११२ ॥

अध्रुवेण शरीरेण ध्रुवं यो न प्रसाधयेत् ।
ध्रुवं तस्य परिभ्रष्टमध्रुवं नष्टमेव च ॥११३॥

जो अध्रुव शरीरसे नित्य रहनेवाले यशकी साधना नहीं करता है, उसका ध्रुव नष्ट हो जाता है और अध्रुव : तो नष्ट है ही ॥ ११३ ॥

आयुषः खंडखंडानि निपतंति तदग्रतः ।
अहोरात्रापदेशेन किमर्थं नावबुध्यसे ॥ ११४ ॥

उसके आगे आयुके खंड २ दिनरातके बहानेसे गिरतेहैं इस अर्थको क्यों नहीं जानते ॥ ११४ ॥

यदा न ज्ञायते मृत्युः कदा कस्य भविष्यति ।
आकस्मिके हि मरणे धृतिं विंदति कस्तदा ११५

जब कि यह बात, नहीं जानी जाती कि कब किसकी मृत्यु होगी फिर आकस्मिक मरणका कौन विश्वास करै ॥ ११५ ॥

परित्यज्य सदा सर्वमेकाकी यास्यसि ध्रुवम् ।
न ददासि कदा कस्मै पाथेयार्थमिदं धनम् ११६

जब कि अवश्यही यह प्राणी सब कुछ छोडकर इकला जायगा तो क्यों नहीं मार्गके योग्य धन प्रदान करता है ॥ ११६ ॥

गृहीतदानपाथेयाः सुखं यांति यमालयम् ।
अन्यथा क्लिश्यते जन्तुः पाथेयरहिते पथि ॥ ११७

राहचयेनी करनेसे सुखपूर्वक यमालयमें जाते हैं मार्गयोग्य दान न देनेसे यह प्राणी मार्गमें क्लेश पाता है ॥ ११७॥

येषां काले यदा वा हि पूर्णभांडः पुरो व्रजेत् ।
गच्छतां स्वर्गदेशस्य तेषां लाभः पदे पदे ॥ ११८

जिन मनुष्योंके अतिथि पूजनके समय अतिथि

पूर्णपात्र होकर जाता है स्वर्गमें जाते समय उनको पद २ में लाभ होता है ॥ ११८ ॥

इति ज्ञात्वा नरः पुण्यं कुर्यात्पापं विवर्जयेत् ।
पुण्येन याति देवत्वमपुण्यान्नरकं व्रजेत् ॥११९॥

ऐसा जानकर मनुष्य पापरहित होकर पुण्य करै, पुण्यसे देवत्वको प्राप्त होता और अपुण्यसे नरकको जाता है ॥ ११९ ॥

ये मनागपि देवेशं प्रपन्नाः शरणं शिवम् ।
तेऽपि घोरं न पश्यंति न यमं नरकं तथा ॥१२०॥

जो एक बारभी देवेश शिवकी शरणको प्राप्त हुए हैं वे भी घोर यमराजका दर्शन नहीं करते हैं ॥ १२० ॥

किन्तु पापैर्महाघोरैः किंचित्कालं शिवाज्ञया ।
वसंति तत्र मानुष्यास्ततो यांति शिवं पुरम् १२१

परन्तु शिवजीकी आज्ञासे महाघोर पापोंके करनेवाले किंचित्काल दुःखमें स्थित होकर वहाँ रहते हैं और पीछे शिवपुरको चले जाते हैं ॥ १२१ ॥

ये पुनः सर्वभावेन प्रतिपन्ना महेश्वरम् ।
न ते लिप्यन्ति पापेन पद्मपत्रमिवांभसा ॥१२२॥

जो सब भावसे शिवकी शरणमें प्राप्त हुए हैं, वे पापसे लिप्त नहीं होते जैसे जलसे कमल ॥ १२२ ॥

उक्तं शिवेति यैर्नाम तथा हरहरेति च ।
न तेषां नरकाद्भीतिर्यमाद्धि मुनिसत्तम ॥१२३॥

जिन्होंने शिव शिव व हर हर उच्चारण किया है, हे मुनिश्रेष्ठ ! उनको नरकसे और यमसे भय नहीं होताहै ॥ १२३ ॥

तस्माद्विवर्द्धयेद्भक्तिमीश्वरे सततं बुधः ॥१२४॥

इति श्रीसिद्धशङ्करतन्त्रे सर्वतन्त्रोत्तमे अघोरकल्प-
वामदेवकल्प-सद्योजातकल्पादिकथनं नाम
चतुर्थः पटलः समाप्तः ॥ ४ ॥

इस कारण विद्वान्को ईश्वरमें निरन्तर भक्ति बढानी चाहिये ॥ १२४ ॥

इति सिद्धशङ्करतन्त्रभाषाटीकायां चतुर्थः पटलः समाप्तः॥ ४ ॥

पंचमः पटलः ।

अथ पञ्चाङ्गशुद्धिः ।

पंचाङ्गशुद्धिं विना पूजायाः निष्फलत्वा-
त्तन्निरूप्यते । तंत्रकुलार्णवे-

ईश्वर उवाच ।

आत्मस्थानमंत्रद्रव्यदेवताशुद्धिस्तु पंचमी ।
यावन्न कुरुते देवि तस्य देवार्चनं कुतः ।
पञ्चशुद्धिं विना पूजा अभिचाराय कल्पते ॥१॥

अब पंचांगशुद्धिको कहते हैं—विना पंचांग शुद्धिके पूजा निष्फल होतीहै इसलिये पंचांगशुद्धि कहतेहैं। कुलार्णव तंत्रमें महादेवजी कहतेहैं कि, आत्मा, स्थान, मंत्र, द्रव्य और देवता इन्हींको पंचांगशुद्धि कहतेहैं। विना इनकी शुद्धि किये देवता पूजाको ग्रहण नहीं करतेहैं पंचांगशुद्धिके विना जो पूजा की जाती है वह अभिचारके निमित्त होती है॥ १ ॥

सुस्नातैर्भूतशुद्ध्या च प्राणायामादिभिस्तथा ।
षडंगाद्यखिलैर्न्यासैरात्मशुद्धिरुदीरिता ॥ २ ॥

तीर्थादिके शुद्ध जलमें स्नान करनेसे भूतशुद्धि होती है प्राणायाम और षडङ्गन्यास करनेसे आत्माकी शुद्धि होती है ॥ २ ॥

संमार्जनानुलेपाद्यैर्दर्पणोदरवच्छुभम् ।
वितानधूपदीपादिपुष्पमाल्यादिशोभितम् ॥
पञ्चवर्णरजोभिश्च स्थानशुद्धिरुदीरिता ॥ ३ ॥

जिस स्थानमें पूजा कीजाय उस स्थानको झार पोंछकर साफ करे फिर जलसे धोकर गायके गोबरसे लीप दर्पणकी समान स्वच्छ करै फिर उस स्थानके ऊपर कपडेकी चादर (छत्त) लगावै और उस स्थानको फूलोंकी मालासे शोभितकर धूपदीपादिसे सुगंधित एवं प्रकाशित करै अनन्तर उस स्थानको पाँचों रंगोंसे रंजित करै ऐसे स्थानको स्थानशुद्धि कहते हैं ॥ ३ ॥

ग्रथित्वा मातृकावर्णैर्मूलमंत्राक्षराणि च ।
क्रमोत्क्रमं द्विरावृत्त्य मंत्रशुद्धिरितीरिता ॥ ४ ॥

मातृका वर्णोंके द्वारा अनुलोम और विलोमभावसे मंत्रोंके अक्षरोंको पुटितकर दो आवृति करे ऐसा करनेसे मंत्रशुद्धि होती है ॥ ४ ॥

पूजाद्रव्याणि संप्रोक्ष्य मूलास्त्रैश्च विधानतः ।
दर्शयेद्धेनुमुद्रादीन् द्रव्यशुद्धिः प्रकीर्तिता ॥५॥

पूजाकी समस्त सामिग्रीको कुशके अग्रभागसे मूल और फट् इन मंत्रोंद्वारा प्रोक्षणकर धेनुमुद्रा दिखानेसे द्रव्यशुद्धि होती है ॥ ५ ॥

पीठदेवीं प्रतिष्ठाप्य सकलीकृत्य मंत्रवित् ।
मूलमंत्रेण माल्यादीन् धूपादीनुदकेन च ॥
त्रिवारं प्रोक्षयेद्विद्वान् देवशुद्धिरितीरिता ।
पंचशुद्धिं विधायेत्थं पश्चात्पूजां समाचरेत् ॥६॥

साधक पीठशक्तिकी पूजाकर मूलमंत्रके द्वारा

सकलीकरण करै और मूलमंत्रोंके द्वारा माला इत्यादिको धूप दीप देकर प्रोक्षण करै, ऐसा करनेसे देवशुद्धि होती है। इसभांति पञ्चाङ्गशुद्धि करनेके पीछे देवताकी पूजा करै ॥ ६ ॥ इति पंचांगशुद्धि ॥

अथ मंत्रसिद्धिरुपायः । तदुक्तं गौतमीयेसम्यगनुष्ठितो मंत्रो यदि सिद्धिर्न जायते ।
पुनस्तेनैव कर्त्तव्यं ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ १ ॥

अब मंत्रसिद्धिका उपाय कहते हैं—गौतमीय तंत्रमें लिखा है कि, उत्तम प्रकारसे पुरश्चरणादिका अनुष्ठान करनेसे यदि मंत्रसिद्धि न हो तो फिर उसी प्रकारसे अनुष्ठान करै तो मंत्र सिद्ध होजाता है ॥ १ ॥

पुनरनुष्ठितो मंत्रो यदि सिद्धो न जायते ।
पुनस्तेनैव कर्त्तव्यं ततः सिद्धो न संशयः ॥ २ ॥

यदि दूसरी वारके अनुष्ठान करनेपर मन्त्रकी सिद्धि न हो तो तीसरी वारके अनुष्ठान करनेसे निःसन्देह मन्त्र सिद्ध हो जाता है ॥ २ ॥

पुनःसोऽनुष्ठितो मंत्रो यदि सिद्धो न जायते ।
उपायास्तत्र कर्त्तव्याः सप्त शंकरभाषिताः ॥ ३ ॥

यदि तीसरी वारके अनुष्ठान करनेपर भी मंत्र सिद्ध न हो तो महादेवजीके कहे हुए सात उपायोंको करै॥३॥

भ्रामणं रोधनं वश्यं पीडनं शोषपोषणे ।
दाहनान्तं क्रमात्कुर्यात्ततः सिद्धो भवेन्मनुः ॥ ४ ॥

भ्रामण. रोधन, वशीकरण, पीडन, शोषण, पोषण और दाहन इन सात उपायोंके करनेसे निश्चय मंत्र सिद्ध हो जाता है ॥ ४ ॥

भ्रामणं वायुबीजेन ग्रथनं क्रमयोगतः ।
यंत्रे तन्मन्त्रमालिख्य सिल्हकर्पूरकुंकुमैः ।
उशीरचंदनाभ्यां तु मंत्रं संग्रिथितं लिखेत् ॥ ५ ॥

अब सातों प्रकारके उपायोंकी विधि कहते हैं– " यं " इस वायु बीजसे मंत्रके समस्त अक्षरोंको ग्रथित करै अनन्तर शिलाजीत. कपूर. केशर. वाला

और चंदन इन सबको एकत्र कर इनके द्वारा प्रथम वायुबीज " यं " फिर मंत्रका अक्षर फिर " यं " फिर मंत्रका दूसरा अक्षर इसभाँति यंत्रपरसे मंत्रके समस्त अक्षरोंको लिखै ॥ ५ ॥

क्षीराज्यमधुतोयानां मध्ये तल्लिखितं भवेत् ।
पूजनाज्जपनाद्धोमाद्भ्रामितः सिद्धिदो भवेत् ॥६॥

फिर इस लिखे हुए मंत्रको दूध, घृत, शहत और गंगाजलमें डाले इसके उपरान्त पूजा करै फिर जप और होम करनेसे मंत्र सिद्ध होता है । यह मंत्रका भ्रामण नामक उपाय कहा ॥ ६ ॥

भ्रामितो नैव सिद्धः स्याद्रोधनं तस्य कारयेत् ।
सारस्वतेन बीजेन संपुटीकृत्य संजपेत् ॥
एवं रुद्धो भवेत्सिद्धो नचेदेतद्वशीकुरु ॥ ७ ॥

जो भ्रामण करनेपरभी मंत्र सिद्ध न हो तो उस मंत्रका रोधन करै ' ऐं ' इस बीजसे मंत्रको पुटितकर

जप करै इसभाँति जपकरनेसे रोधन कहाता है, जब रोधन करके मंत्र जपनेसेभी सिद्ध न हो तो मंत्रका वशीकरण करै ॥ ७ ॥

अलक्तं चन्दनं कुष्ठं हरिद्रामादनं शिला ।
एतैस्तु मंत्रमालिख्य भूर्जपत्रेऽष्टगंधभिः ॥
धार्यः कंठे भवेत्सिद्धःपीडनं वास्य कारयेत् ॥८॥

लाखका रंग, लाल चंदन, कूठ, हल्दी, धतूरेके बीजोंका रस, मनशिल और अष्टगंध इन सबकी स्याहीसे भोजपत्रपर मंत्र लिखकर कंठमें धारण करै. यह मंत्रका वशीकरण कहाता है जो वशीकरण करनेसे भी मंत्र सिद्ध न हो तो मंत्रका पीडन करै ॥ ८ ॥

अधरोत्तरयोगेन पदानि परिजप्य वै ।
ध्यायेच्च देवतां तद्वदधरोत्तररूपिणीम् ॥
विद्यामादित्यदुग्धेन लिखित्वाक्रम्य चांघ्रिणा ।
तत्राभूतेन मंत्रेण होमः कार्यो दिने दिने ॥
पीडितो लज्जयाविष्टः सिद्धः स्यादथ पोषयेत् ॥९॥

नीचे और ऊपर वर्णोंके योगसे मंत्रका जप करै और अधरोत्तररूपिणी देवीका पूजन करै पीछे आकके दूधसे मंत्र लिखकर पानीमें डाल उस पानीको सूंघकर प्रतिदिन होम करै यह मंत्रका पीडन कहाता है. जो इस भाँति पीडन करनेपर भी मन्त्र सिद्ध न हो तो मन्त्रका पोषण करै ॥ ९ ॥

वालायास्त्रितयं बीजमाद्यन्ते तस्य योजयेत् ।
गोक्षीरमधुनालिख्य विद्यां पाणौ निधारयेत् ।
पोषितोऽयं भवेत्सिद्धोनचेत्कुर्वीतशोषणम् ॥ १०

मन्त्रके आदि और अंतमें वालाके तीनों प्रकारके बीजोंको निकालकर जप करै गौके दूधमें शहत मिलाय उससे मंत्र लिखकर हाथमें बांधै इसको मंत्रका पोषण कहते हैं. जब पोषण करनेपर भी मंत्र सिद्ध न हो तो मन्त्रका शोषण करै ॥ १० ॥

द्वाभ्यां तु वायुबीजाभ्यां मंत्रं कुर्याद्विगर्भितम् ।

एषा विद्या गले धार्या लिखित्वा यज्ञभस्मना ।
शोषितश्चाप्यसिद्धश्चेद्दाहनीयोऽग्निबीजतः॥११॥

" यं " इस वायुबीजसे मंत्रको पुटितकर जप करै और इस मंत्रको यज्ञकी भस्मसे भोजपत्रपर लिखकर गलेमें बाँधे इसको मंत्रका शोषण कहते हैं जो इस भाँतिसेभी मंत्र सिद्ध न हो तो मंत्रका दाहन करे ॥११॥

आग्नेयेन तु बीजेन मन्त्रेष्वेकैकमक्षरम् ।
आद्यन्तमध ऊर्ध्वंश्च योजयेद्दाहकर्मणि ।
ब्रह्मवृक्षस्य तैलेन मंत्रमालिख्य धारयेत् ।
स्कंधदेशे ततो मंत्रः सिद्धःस्याच्छङ्करोदितः॥१२

मंत्रके एक एक अक्षरके आदि मध्य और अंतमें " र " इस अग्नि बीजको लगाकर दाहन क्रियाको आरम्भ करै अर्थात ब्रह्मवृक्षके तैलसे मन्त्रको भोजपत्र-पर लिखकर कन्धेपर धारण करै तो ऐसा मन्त्र सिद्ध होजाता है महादेवजी कहते हैं ॥ १२ ॥

इत्येवं कथितं सम्यक् केवलं तव भक्तितः ।
एकेन तु कृतार्थः स्याद्बहुभिः किमु सुव्रते ॥ १३ ॥

हे देवि ! केवल तुम्हारी भक्तिके वश होकर इस मंत्रसिद्धिके सात उपाय कहे इनमेंसे एकही उपायके करनेसे निश्चय मंत्र सिद्ध होजाता है ॥ १३ ॥

अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि मंत्रसिद्धेस्तु कारणम् ।
मातृकापुटितं कृत्वा तन्मंत्रं प्रजपेत्सुधीः ॥
क्रमोत्क्रमाच्छतावृत्त्या तदन्ते केवलं मनुम् ।
एवं तु प्रत्यहं कुर्यात् यावल्लक्षः समाप्यते ॥
निश्चितं मंत्रसिद्धिःस्यादित्युक्तं तंत्रवेदिभिः ॥ १४ ॥

अब दूसरे प्रकारसे मंत्रसिद्धिका उपाय कहता हूं— अनुलोम और विलोमभावसे मातृका वर्णोंके द्वारा मंत्रको पुटितकर मंत्रको जपै, फिर केवल मंत्र जपै, इस भाँति प्रतिदिन जप करनेसे जबतक लक्ष मंत्रकी समाप्ति होगी तबतक अवश्य मंत्र सिद्ध हो जायगा ॥ १४ ॥

इति मंत्रसिद्धिके उपाय समाप्त ।

अथ सिद्धिलक्षणम् ।

मनोरथानामक्लेशसिद्धिरुत्तमलक्षणम् ।
मृत्यूनां हरणं तद्वद्देवतादर्शनं तथा ॥
प्रयोगोऽस्याक्लेशसिद्धः सिद्धेस्तु लक्षणं परम् ॥१॥

अब मंत्रसिद्धिका लक्षण कहते हैं—इच्छा करतेही विना क्लेशके मनोरथ सिद्ध होजानेको उत्तमसिद्धिका लक्षण जानो, मृत्युको हटा देना और देवदर्शन करना भी मंत्रसिद्धिका लक्षण है ॥ १ ॥

परकायप्रवेशश्च पुरप्रवेशनं तथा ।
ऊर्ध्वोत्क्रमणमेवं हि चराचरपुरे गतिः ॥
खेचरी मेलनञ्चैव तत्कथाश्रवणादिकम् ।
भूच्छिद्राणि प्रपश्येत्तु तत्त्वमस्य च लक्षणम् ॥
ख्यातिर्वाहनभूषादिलाभः सुचिरजीवनम् ।
नृपाणां तद्गणानां च वशीकरणमुत्तमम् ॥
सर्वत्र सर्वलोकेषु चमत्कारकरः सुखी ।

रोगापहरणं दृष्ट्या विषापहरणं तथा ॥
पाण्डित्यं लभते मंत्री चतुर्विधमयत्नतः ।
वैराग्यं च मुमुक्षुत्वं त्यागिता सर्ववश्यता ॥
अष्टाङ्गयोगाभ्यसनं भोगेच्छापरिवर्जनम् ।
सर्वभूतेष्वनुकम्पा सर्वज्ञादिगुणोदयः ॥
इत्यादिगुणसंपत्तिर्मध्यसिद्धेस्तु लक्षणम् ॥ २ ॥

जिस मनुष्यको मंत्र सिद्ध होता है वह दूसरे शरीरमें प्रवेश कर सक्ता है, पलमात्रमें दूसरे गाँवमें चला जाता है और आकाशमें उड सक्ता है समस्त चराचरको जान जाता है खेचरी देवियोंमें उनकी बराबर बैठने उठनेकी शक्ति होजाती है पृथ्वीसंबंधी समस्त बातोंका ज्ञान होजाता है, इस पुरुषका संसारभरमें यश फैल जाता है और अनेक प्रकारके वाहन भूषणादि प्राप्त होते हैं उसकी दीर्घायु होती है राजा और राजपरिवारको अपने वशीभूत कर सकता है सर्वत्र आश्चर्यके कार्योंको दिखाता हुआ सुखसे समय बिताता है ऐसे पुरुषको

दृष्टिसे रोग और विष दूर होजाते हैं विषयभोगोंसे चित्तको हटाकर मुक्ति पानेकी लालसा करता है सबको त्यागनेकी शक्ति और सबको वशमें करनेकी शक्ति हो जाती है योगके आठों अंगोंका अभ्यास हो जाता है विषयोंके भोगकी इच्छा नहीं रहती समस्त प्राणियोंपर दया उमडती है और सर्वज्ञता आदि गुणोंका उदय हो जाता है इत्यादि गुणोंके प्राप्त होनेसे मध्यम सिद्धिके लक्षण जाने जाते हैं ॥ २ ॥

ख्यातिर्वाहनभूषादिलाभः सुचिरजीवनम् ।
नृपाणां तद्गणानां च वात्सल्यं लोकवश्यता ॥
महैश्वर्यं धनित्वं च पुत्रदारादिसंपदः ।
या सिद्धिरधमा प्रोक्ता मंत्रिणामाद्यभूमिका ॥
सिद्धमंत्रस्तु यः साक्षात्स शिवो नात्र संशयः ॥

इति श्रीसिद्धशंकरतंत्रे सर्वतंत्रोत्तमे मंत्रसिद्धयुपायं सिद्धिलक्षणञ्च नाम पंचमः पटलः ॥ ५ ॥

कीर्ति वाहन और अलङ्कारादिकी प्राप्ति दीर्घजीवन राजा वा राजपरिवारका प्रीतिपात्र मनुष्योंके वशीभूत करनेकी शक्ति और बडे ऐश्वर्यकी प्राप्ति यह सब अधम सिद्धिके लक्षण होते हैं जिसको मंत्रसिद्ध हो जाता है उसको निःसन्देह शिवजीके समान जानना चाहिये ॥ ३॥

इति श्री मुरादाबादनिवासि-पंडितश्यामसुन्दरलालत्रिपाठीकृत-सिद्धशंकरतन्त्रभाषाटीकायां पञ्चमः पटलः समाप्तः ॥ ५ ॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS